अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

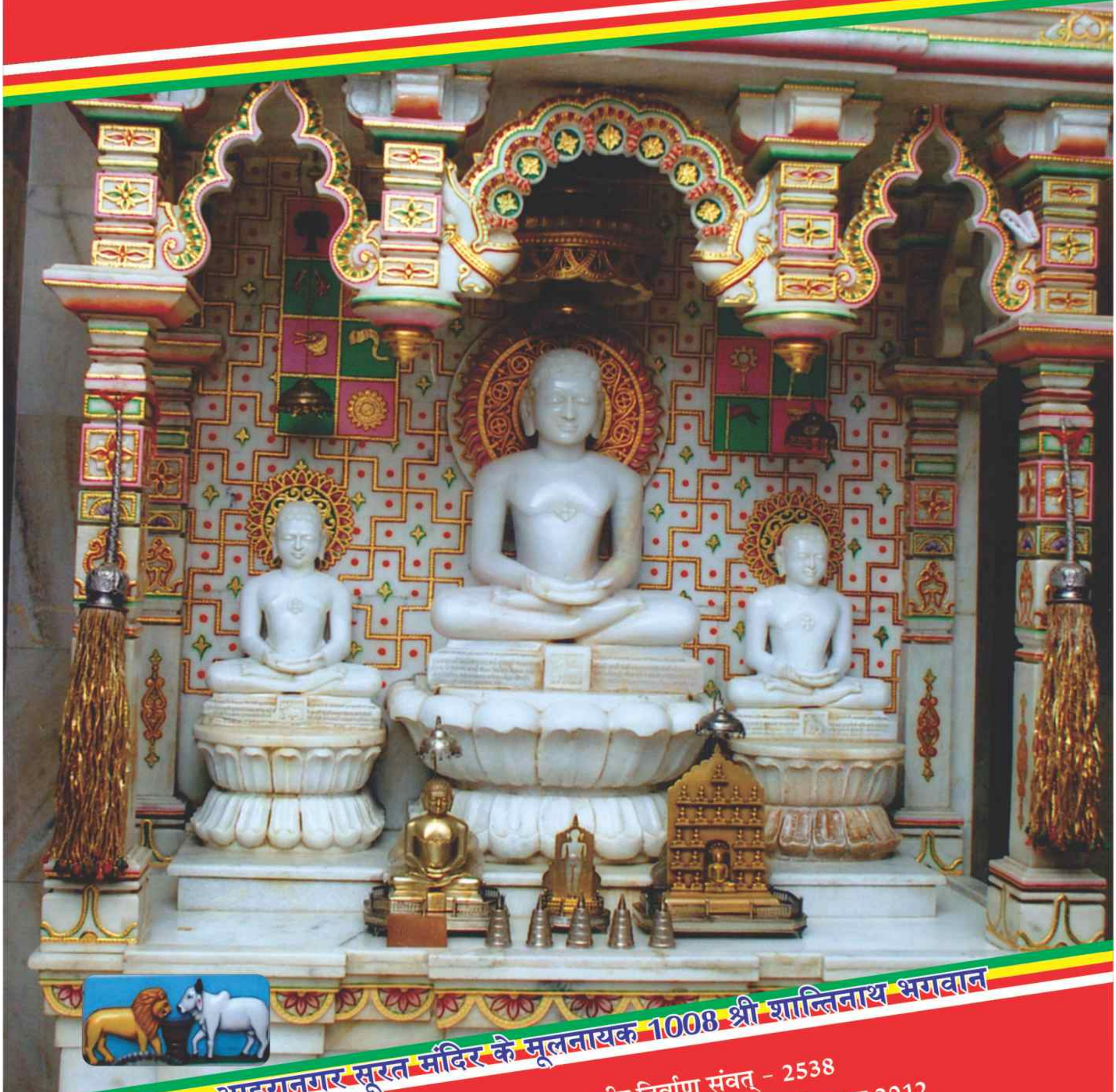

आहुरानगर सूरत मंदिर के मूलनायक 1008 श्री शान्तिनाथ भगवान

वीर निर्वाण संवत् - 2538

भाद्र शुक्ल पक्ष, वि.सं. 2069, सितम्बर 2012

वर्ष : छह

अंक : इक्कीस

मूल्य : 10/-

मूकमाटी

जिसकी आँखे
और सरल
और तरल हो आ रही हैं,
जिनमें
हृदय वती चेतना का
दर्शन हो रहा है,
जिसके
सल क्षलों से शून्य
विशाल भाल पर
गुरु-गम्भीरता का
उत्कर्षण हो रहा है।
जिसके
दोनों गालों पर
गुलाब की आभा ले
हर्ष के संवर्धन से
दृग-बिन्दुओं का अविरल
वर्षण हो रहा है,
विरह-रिक्तता, अभाव-
अलगाव-भाव का भी
शनै: शनै:
आकर्षण हो रहा है,
नियोग कहो या प्रयोग
सहज-रूप से अनायास
अनन्य आत्मा का
संस्पर्शन हो रहा है।

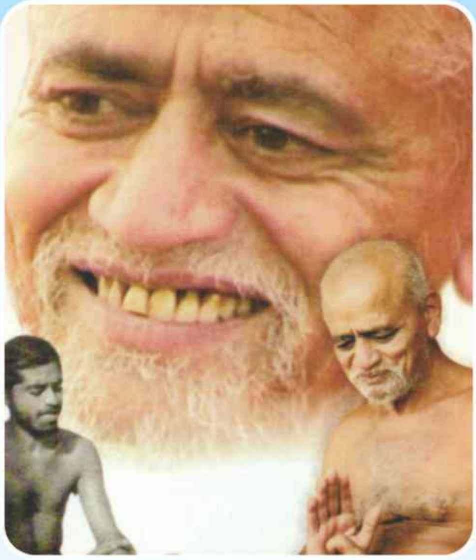

क्रमश:........

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

5 अक्टूबर	- रोहिणी / कनकावली व्रत		दीपावली
13 अक्टूबर	- मुक्तावली व्रत		गौतम स्वामी केवलज्ञान
22 अक्टूबर	- भ. शीतलनाथ मोक्ष कल्याणक		वर्षायोग निष्ठापन
25 अक्टूबर	- मुक्तावली व्रत	21-28 नवम्बर	- अष्टाह्निका व्रत
2 नवम्बर	- रोहिणी व्रत	29 नवम्बर	- रोहिणी व्रत
11 नवम्बर	- धनतेरस, मंगल त्रयोदशी/मुक्तावली व्रत	9,15 दिसम्बर	- मुक्तावली व्रत
13 नवम्बर	- भ. महावीर मोक्ष कल्याणक	26 दिसम्बर	- रोहिणी व्रत

मुनिश्री आर्जवसागर जी
क्षुल्लक अवस्था में

मुनिश्री आर्जवसागर जी
ऐलक अवस्था में

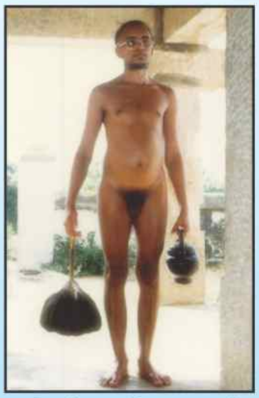

मुनिश्री आर्जवसागर जी
महाराज

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य **मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।**

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन, एल.आई.जी.-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-462003 (म.प्र.) फोन : 4221458

● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक

भाव विज्ञान

(BHAV VIGYAN)

वर्ष-छह
अंक - बीस

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. सह सम्पादकीय — 2
2. गुरुभक्ति — 4
3. व्यक्तित्व एवं कृतित्व — 5
4. सम्यक् ध्यान शतक — 7
   मुनि आर्जवसागर
5. पारसचंद से बने आर्जवसागर — 10
   सह-संपादकीय
6. वर्षायोग की धर्मप्रभावना — 15
8. गणितसार संग्रह — 17
9. मुक्ति के योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव — 19
   शिवचरनलाल जैन मैनपुरी
10. आधुनिक विज्ञान और सम्यग्ज्ञान — 22
    प्राचार्य पंडित निहालचंद जैन
11. आगम और अलंकारमय तीर्थोदय काव्य — 25
    पं. लालचन्द जैन 'राकेश'
12. अभीक्ष्ण संवेग में जगत् के स्वरूप का चिन्तन — 27
    प्रो. एल.सी. जैन
13. जैन धर्म और विज्ञान — 29
    मुनिश्री आर्जवसागर
16. प्रश्नोत्तरी — 31

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

प्रबंध सम्पादकीय

धार्मिक पर्वों से आत्मा शुद्ध गुणों से अलंकृत होती है। पर्व व्रतों पूरित भाद्रपद मास के सम्बन्ध में आर्ष परम्परा के विद्वान आचार्यों ने उपदेशित किया है कि –

अहो भाद्र पदाख्योऽयं मासोऽनेक व्रताकरः ।

धर्म परो मध्येऽन्य, मासानां नरेन्द्रवत् ।।

जिस प्रकार मनुष्यों में श्रेष्ठ राजा (चक्रवर्ती) माना गया है। उसी तरह रत्नत्रय धर्म की वृद्धि हेतु अनेक व्रतों का स्थान स्वरूप भाद्रपद मास को सभी मासों में श्रेष्ठ माना गया है।

जैन धर्म के महत्वपूर्ण व श्रेष्ठ व्रतों का सर्वाधिक समागम भाद्रपद मास में है। सोलहकारण व्रत, दशलक्षण व्रत, पुष्पांजली व्रत, रत्नत्रय व्रत के साथ अनंतव्रत, कर्मनिर्जरा व्रत व शील सप्तमी व्रतों का पालन करने का सौभाग्य श्रावकों को इसी भाद्रपद माह में मिलता है।

इन सभी में सोलहकारण व पर्यूषण पर्व का अपना एक अलग महत्व है। पर्यूषण पर्व के इन दस दिनों में मुक्ति मार्ग की शिक्षा देने वाले उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मों का चिंतन किया जाता है।

प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य शाश्वत सुख होता है और यह शाश्वत सुख मोक्ष में ही मिलता है। मोक्ष हेतु आत्म स्वभावरूप धर्म का अवलम्बन आवश्यक है। आत्म स्वभाव को पाने हेतु दश लक्षण हैं। उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिञ्चन्य तथा ब्रह्मचर्य ये आत्मा के श्रेष्ठ गुण हैं।

यदि ऐसे महान पर्यूषण पर्व में श्रावकों को साधु/संतों का सुयोग मिले तो वह सोने में सोहागा कार्य करता है तथा श्रावकों का मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है।

ऐसा ही एक सुयोग बुंदेलखण्ड में स्थित एक धर्मनगरी अशोक नगर (गुना म.प्र.) के श्रावकों को सन् 2005 में प्राप्त हुआ। भगवंत कुन्दकुन्दाचार्य की श्रमण परंपरा के उन्नायक पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के सुशिष्य तीर्थंङ्करों की वाणी के यथार्थ उद्घोषक पूज्य मुनि पुंगव आर्जवसागर जी महाराज ने अशोक नगर में अपने चातुर्मास करने का निश्चय किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का गहन गम्भीर ज्ञान, निर्दोष, निस्पृह चर्या और सहज सरलवृत्ति, व्यक्ति को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

अशोक नगर में पर्यूषण पर्व में पूज्य मुनि श्री आर्जवसागर महाराज के मुखचन्द्र से दशधर्म के प्रवचनों की धारा की झड़ी से समागत जन आप्याथित हुये। महाराज श्री की वाणी में अद्‌भुत आकर्षण है वे अपनी बात को सहजता और सरलता से श्रोताओं के हृदय में उतार देने में सिद्ध हस्त हैं यही कारण है कि आज लोग मुनिश्री का नाम सुनते ही उनकी अमृतवाणी का रसपान करने हेतु ललायित हो उठते हैं।

अध्यक्ष : डॉ. सुधीर जैन

दसलक्षण धर्म का महत्व एवं प्रेरणा

धर्म कहे जो दशलक्षण ये, परमपूज्य माने जाते।
जो भी इनका पालन करते, नहीं जगत में भरमाते।।
इस जीवन को नश्वर समझो, इसका नहीं भरोसा है।
धर्म पालना तुम चाहो तो, अभी इसी पल मौका है।।97।।

कितने भव हैं बीत गये जो, नहीं धरम का ध्यान किया।
विषयों को ही अच्छा माना, उनका ही सम्मान किया।।
धर्मी बनकर हमें जगत में, नरभव सफल बनाना है।
झूठे सब वैभव को तजकर, आत्मनिधि को पाना है।।98।।

क्षमावाणी कैसे मनायें?

क्षमा भाव का पर्व मनाने, पहले सबको क्षमा करें।
फिर हम माँगे क्षमा सभी से, मन में निर्मल भाव धरें।।
क्षमा नहीं जो करे शत्रु को, नहीं क्षमा है कहलाती।
कषाय भावना इस जगत में, वैरभाव को उपजाती ।।100।

- धर्मभावना शतक

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	**अरविन्द जैन,** पथरिया	**इंजी. महेन्द्र जैन**	**राजेश जैन 'रज्जन'**	**डॉ सुधीर जैन**
94256 01161	दमोह		दमोह	9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल बागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

गुरु भक्ति

विद्यासागर जी के शिष्य आर्जवसागर जी तूने कर दिया कमाल ।।
जीता महान मोह, बिना खड्ग बिना ढाल।
तेरी महान साधना, तेरा महान त्याग।
तेरी अपूर्व शान्ति अकथनीय था विराग।।
तू माया देवी मात से जन्मा था महाभाग।
संसार देह भोग से तुझको नहीं था राग।।
तू चल पड़ा विरक्त होके तोड़ मोह जाल।
विद्यासागर जी के शिष्य आर्जवसागर जी तूने कर दिया कमाल।।
तूने अहिंसा सत्य को साकार दिखाया।
अध्यात्मवाद का अपूर्व स्त्रोत बहाया।।
वैभव की दासता से हमें मुक्त कराया।
घर-घर में महावीर का संदेश सुनाया।।
ऋषिराज था उदार था तेरा हृदय विशाल।
विद्यासागर जी के शिष्य आर्जवसागर जी तूने कर दिया कमाल।।
जन जन को धर्म राह पे तूने चलना सिखाया।
और मानवीय सभ्यता का पाठ भी पढ़ाया।।
पथ भ्रष्ट प्राणियों को सुपथ तूने दिखाया।
चिर मोह निद्रा से हमें आके जगाया।।
इस इक्कीसवीं सदी का तू संत है बेमिसाल।
विद्यासागर जी के शिष्य आर्जवसागर जी तूने कर दिया कमाल।।
विद्यासागर से गुरु मिले तुम हो गये निहाल।
भीषण विपत्तियाँ भी कुछ न कर सकी विकार।।
मुख पर अपूर्व शान्ति आत्म तेज का निखार।
ओ मुक्तिपथ के राही तुझे हम सबका नमस्कार।।
चरणों में झुके हम भक्त कोटि कोटि बार।
विद्यासागर जी के शिष्य आर्जवसागर जी तूने कर दिया कमाल।।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य
मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का संक्षिप्त

''व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

परम पूज्य मुनि श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का जन्म फुटेराकलाँ गाँव में 11-9-1967 को मायादेवी पिता शिखरचन्दजी के घर आंगन में हुआ। बचपन लाड़-प्यार से बीता, बचपन से आपको मंदिर जाना, मुनियों के दर्शन करना, प्रतियोगिताओं में भाग लेना आदि धार्मिक कार्यों में रुचि थी। बी.ए. प्रथम वर्ष की पढ़ाई के बाद ही आपका चिन्तन वैराग्य की और बढ गया। चारों गतियों के दु:ख से संसार में ही भ्रमण नहीं करना है अब तो आत्म कल्याण का कार्य करना है अतः कदम बढ़ गये पनागर क्षेत्र की ओर वहाँ आचार्य श्री विद्यासागरजी से सन् 1984 में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर आजीवन नमक का त्याग कर दिया। सन् 1985 में आहारजी में सातवीं प्रतिमा व्रत आचार्य श्री से ही लिये। सन् 1985 में आहारजी में ही क्षुल्लक दीक्षा श्री आचार्य विद्यासागर जी महाराज से ही लेकर आजीवन शक्कर, मावा, काजू, बादाम का त्याग कर दिया। सन 1987 में ऐलक दीक्षा थुबौनजी में हो गई ।

कदम हर दम आगे बढ़ने के लिये प्रेरित थे। आखिर सन् 1988 में महावीर जयन्ती का वह पावन दिवस आ ही गया और सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने मुनि दीक्षा प्रदान की। दीक्षा के बाद ही 1 वर्ष की मौन साधना की। आपने और अनेक शास्त्रों का अध्ययन भी किया। अनेक राज्यों में विहार कर महति धर्म प्रभावना की। अभी तक मुनि श्री के सानिध्य में 23 पंचकल्याण एवं 21 बड़े विधान अनेक वेदी प्रतिष्ठा भी हो चुकी हैं।

साथ ही अखिल भारतीय विदवत संगोष्ठी पोन्नूरमूलै, भोपाल, सम्मेदशिखर, राँची, जयपुर में तथा डॉक्टर सम्मेलन- अहिंसा सम्मेलन- कवि सम्मेलन-धार्मिक पाठशाला सम्मेलन आदि कार्य भी आपके सानिध्य में हुये। आपके द्वारा साहित्य सृजन हिन्दी, तमिल आदि भाषाओं में किया गया। मुख्य कृतियाँ इस प्रकार है:- जैनागम संस्कार, तीर्थोदय काव्य, धर्म प्रभावना शतक, परमार्थ साधना, बचपन का संस्कार, पर्युषण पीयुष, जैन धर्म में कर्म व्यवस्था, सम्यक्ध्यान शतक, नेक जीवन, आर्जववाणी, चौबीस ठाणा, मोक्षतरु-दसधर्म तथा वारसाणुवेक्खा एवं इष्टोपदेश का पद्यानुवाद आदि साहित्य गद्यात्मक एवं पद्यात्मक रूप में है।

आपके ही आशीर्वाद व प्रेरणा से भाव विज्ञान पत्रिका भी भोपाल से प्रकाशित होती है एवं पत्रिका से भी निरन्तर धर्म प्रभावना हो रही है। मुनि श्री के जीवन का हर पृष्ठ महानताओं से भरा है। जिसकी अभिव्यक्ति शब्दों से नहीं हो सकती क्योंकि....

ज्योति पुंज मुनि प्रवर की गरिमा कुछ और है, अंबर अवनि में मयूर महिमा का शोर है
कैसे संकीर्तन करू करुणा सदन आपका, क्योंकि असलियत का कहीं और न छोर है।

हिमालय से विराट, सागर से गंभीर, चन्द्र से उज्ज्वल, सूर्य से तेजस्वी गुरुवर को शब्दों की सीमा से बांधे भी कैसे?

क्या कहूँ, कैसे कहूँ, बात सूरज की दीपक की जुबानी है जो भी कहूँ जो अल्प ही होगा सागर की गाथा बंद की कहानी है।

परम पूज्य गुरुवर मानवता, नैतिकता, सामायिक, स्वाध्याय व जैनागम संस्कार के प्रबल प्रेरक एवं प्रचारक बनकर धर्म गगन में विहार कर रहे हैं।

मुनि श्री का मानवीय व्यक्तित्व अनेक गुणो का मिश्रण है। आपका मुनि जीवन प्रारम्भ से ही दिनकर की भांति देदीप्यमान रहा है। स्मिथ हास्य, इन्द्रिय विजय, मार्मिकबात बोलना, शुद्धाचार सत्यानुराग आपके जीवन के मुख्य अंग हैं। सरलता, समता, कथनी और करनी की समन्वयता आपकी प्रेरणा के बिन्दु हैं।

प्रकृति संबंधी भी कुछ अनुपम विशेषतायें आपके जीवन में हैं।

पुष्प के समान कोमल, पर्वत के समान अडिगता, सूर्य के समान तेजस्विता, वृक्ष के समान सहिष्णुता, धरती के समान क्षमता, पंख के समान निर्लेपता ये आपके जीवन की विशेषता हैं। वास्तव में महान आत्माओं का जन्म स्व के साथ पर हित के लिये होता है, किसी ने कहा भी है अगरबत्ती व मोमबत्ती जलकर ही सुगंध व प्रकाश देती है।

आपने भी अपने जीवन में चहु ओर ज्ञान-दर्शन और चारित्र के द्वारा भव्यात्माओं को प्रकाश और सौरभ देकर सुगंधित किया है और कर रहे हैं आपकी अमृतमयी वाणी सुनकर भव्य जीवों के हृदय में नवज्योति जागृत होती है। आपकी माधुर्य रस से परिपूर्ण वाणी से निष्ठुर नीरस हृदय भी सरस हो जाते हैं। आपके जीवन के कण-कण में मन के अणु-अणु में वात्सल्य भरा हुआ है। आपका जीवन सरोवर के समान शांत गंभीर एवं विशाल है। आपके विषय में जितना कहा आप उतना ही कम है। अंत में यही कहना होगा कि प्रकाशित किया और कर रहे है। आप दीप शिखा की तरह हमेशा प्रज्जवलित होते रहें ऐसे गुरुवर मुनि श्री आर्जव सागरजी महाराज के चरणों में शत शत बार नमन....

वर्तमान में सूरत शहर के आहुरा नगर में रजत दीक्षा जयन्ती वर्षायोग आनन्द चल रहा है। जहाँ सुबह-दोपहर -शाम निरन्तर धर्म रूपी ज्ञान की गंगा बह रही है। सभी श्रावणगण धर्म लाभ एवं पुण्य संचय कर रहे हैं।

प्रस्तुति : मंजु गोधा, अध्यक्ष
दि-जैन महासमिति महिला संभाग, सूरत

सम्यक् ध्यान शतक

– *मुनि आर्जवसागर*

गतांक से आगे ....

शुक्ल ध्यान के गुणस्थान

अष्टम गुणस्थान से, प्रथम शुक्ल हो ध्यान।
बारहवें गुणथान में, होय दूसरा जान।।

❖

तेरहवें गुणथान में, तीजा शुक्ल सु–ध्यान।
चौदह में चौथा शुकल, फिर हो मोक्ष महान।।

अन्तिम मंगल

मुनिवर का जीवन सदा, ज्ञान, ध्यान में लीन।
आर्जव मय उपयोग से, बनें स्वयं स्वाधीन।।

❖

सागर वह अध्यात्म का, जिनके अन्दर पूर।
रचित शुद्ध निज आत्म में, भव वांछा से दूर।।

❖

सम्यक् निज उपयोग हो, शुभ अरु शुद्ध महान।
ध्यान जगे वह शुक्ल जब, मिलता केवलज्ञान।।

❖

शतक वर्ष नहिं चाहिए, अन्तर्मुहूर्त्त मात्र।
पूर्ण लीन निश्चल जहाँ, मुनिवर मोक्ष सु–पात्र।।

❖

अष्टापद व सम्मेदगिरि, चम्पापुर गिरिनार।
पावापुर को ध्याय जो, शीघ्र करे भव पार।।

❖

तीन गुप्ति में लीन हो, मन–वच–तन को रोक।
करें ध्यान शिव–मोक्ष पा, जन्म, मृत्यु ना शोक।।

प्रशस्ति

सुप्रतिष्ठित केवली, मोक्ष गये वह थान।
गोपगिरि पावनधरा, जग से पूज्य महान।।

❖

गोपाचल यह ग्वालियर, सिद्धांचल जहँ तीर्थ।
वृषभांचल त्रिशलागिरि, नेमिगिरि भी तीर्थ।।

क्रमशः ....

जय जिनेन्द्र ओ माई जैन्स -जय जिनेन्द्र

O MY JAIN'S JAI JINENDRA

1. जैन सरनेम से अपनी पहचान होनी चाहिये।
2. जैन सरनेस भारत देश में पाँचवे नम्बर और दुनियाँ में ग्यारहवें नम्बर कोटि में हैं।
3. भारत देश में पन्द्रह प्रतिशत (15%) गुजरात में सत्तर प्रतिशत (70%) व्यापार जैनों के हाथ में हैं।
4. जैन समाज वर्ल्ड में छँठवे नम्बर में धनाढ्य समाज गिना जाता है।
5. जैन समाज 423 अलग-अलग पेटा सरनेम में बँटा हुआ है।
6. जैन समाज में 35% NRI (नॉन रेजीडेंट इण्डियन) हैं।
7. जैन सरनेम 43 देशों में ऑफीशिलय सरनेम हैं।
8. 2018 सन् में जैन सरनेम दुनिया की एक नम्बर कोटि में गिनी जायेगी।
9. जैन सरनेम जिन्दगी में पर्याप्त सरनेम हैं।
10. जैन होने का स्वाभिमान करों।
11. जैन शब्द जिनेन्द्र भगवान का सूचक है।
12. जैन शब्द अहिंसा परमो धर्मः का द्योतक है।
13. पूरे विश्व में शाकाहारी भोजन के लिए जैन फूड के नाम से अंतराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात किया गया है।

कृपया अपने नाम से पहले ''जैन '' लिखकर ही अपना नाम लिखें, पश्चात् गोत्र आदि लिखें। जैन समाज एवम् जैन धर्म का गौरव बढ़ावें। जैन समाज की सही गणना अपने नाम के पूर्व जैन लिखने से ही सही हो सकेगी। जैन लिखकर अपना सम्मान बढ़ावें।

जय जिनेन्द्र।

आवश्यक सूचना को कृपया उचित स्थान पर लगाएें, भेजें।

JAI JINENDRA

NOTICE

JAIN AS OUR SURNAME JAIN IS 2ND MOST COMMON SURNAME IN INDIA. 5TH IN ASIA 11TH IN WORLD. 15% OF INDIA'S AND 70 % OF GUJARATI'S BUSINESS IS HANDLED BY JAINS. JAINS ARE THE 6TH MOST RICHEST COMMUNITY IN THE WORLD. JAIN'S SURNAME HAVE 423 DIFFERENT TYPES OF SUB SURNAME. 35 % OF N.R.I. ARE JAINS. JAIN IS THE OFFICIAI SURNAME OF 43 COUNTRY. IN 2018 JAIN WILL BE WORLD'S NO. 1 SURNAME. JAIN THE NAME IS ENOUGH FOR ONE LIFE . BE PROUD TO BE JAIN.

JAI JINENDRA

COURTESY BANGULURU SANGHA
VIMANAPURA. BAINGALORE 560017

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

(बचपन से आज तक जीवन गाथा)

पारसचन्द की मिडिल स्कूल की पढ़ाई पथरिया में, हाई स्कूल की पढ़ाई बांसाकलाँ में सम्पन्न हुई। बांसाकलाँ में वे उसी क्लास में पढ़ते थे जहाँ कि उनके पिता श्री अंग्रेजी और हिन्दी का विषय पढ़ाते थे। इसी वजह से अपने पिताश्री के मुखारबिन्द से शिक्षा पाने का एक सुअवसर मिला। बचपन से पारसचन्द के लौकिक शिक्षा प्रदाता पुराण जी मास्टर साहब (ब्राह्मण शिक्षक), मनोहर सोनी, शिखरचन्द जी बांसा वाले, राजोरिया मास्टर साहब आदि थे। पारसचन्द को पढ़ाई में भूगोल, सामाजिक शास्त्र, और चित्रांकन में बड़ी रूचि थी। राजेश (रज्जन) जैन, सुभाष, संजय, विजय, अनिल, पद्म, रवीन्द्र, कमल आदि उनके मित्र थे। पारस खेल में गेंद, गिल्ली, डण्डा, फुटबाल, काँच की गोलियाँ, कैरम, दौड़ लगाना,ऊपर से कूदना आदि रूप से खेल में रुचि लेकर खेला करते थे। ये खेल मात्र मनोरंजन नहीं थे बल्कि वे एक दिन भव्यात्मा पारस के लिए वैराग्य के कारण बन गये क्योंकि जो जैसी दृष्टि रखता है वैसे सृष्टि को पा लेता है। पारस को रात्रि भोजन, जमीकन्द, सप्त व्यसन, धूम्रपान, फालतू घूमना, धोखा देना, बातें बनाना, अनावश्यक वार्तालाप, गन्दी फिल्म देखना आदि ये बातें ना पसंद थीं। पाँच वर्ष की उम्र से ही पारस चंद को धार्मिक पाठशाला में जाना, स्कूल समय के पूर्व पहुँचना, व्यर्थ झगड़ा नहीं करना, बिना पूछे किसी की वस्तु नहीं लेना, शिक्षकों की आज्ञा का परिपूर्ण ध्यान देना, पिकनिक में आपस में मदद करना, दु:खी, दरिद्री लोगों या गरीब मित्रों की सहायता करना बहुत पसंद था और मात्र सोलह वर्ष की उम्र में ही संगीत पार्टी में मंजीरा आदि के साथ आरती प्रतियोगिता में भाग लेने में बहुत दिल पसंद रुचि थी। पारस चन्द पंच कल्याणक आदि का मेला, मुनि संघ दर्शन, क्षेत्र दर्शन, धार्मिक नाटक, राम-लीला, तीर्थकर की आरती प्रतियोगिता आदि में थी भारी रुचि लेते थे, चाहे कुण्डलपुर का पञ्च कल्याणक हो, चाहे शाहपुर या सिविल वार्ड दमोह का इनमें भी रुचि ली थी, पारस को बचपन से ही बड़े बाबा कुण्डलपुर के साक्षात् दर्शन होते रहे और आचार्य श्री विद्यासागरजी का प्रथम दर्शन जो पथरिया (दमोह) नगर के बांझल सदन में किया था ये दोनों उनके लिए अविस्मरणीय बातें बन गयीं। 16-17 वर्ष की उम्र में ग्यारहवीं बोर्ड परीक्षा पास करने के बाद जो बचपन से जिनालय व पाठशाला जाने का संस्कार था और विनती, स्तुतियाँ, छहढ़ाला, वर्णी जीवन गाथा, कुछ पुराण सुनने वा चारित्र चक्रवर्ती ग्रन्थ पढ़ने का जो संस्कार था उसने आचार्य श्री विद्यासागर जी के संघ में प्रवेश पाने को आकृष्ट किया और अंदाज व अनुमान से गृह में पूछे बिना ही सम्मेद-शिखरजी की ओर रेल से अकेले यात्रा प्रारम्भ कर दी। कटनी में रेल बदली और पारसनाथ फिर मधुबन तक यात्रा चली लेकिन आचार्य श्री तो कलकत्ता या उदयगिरि-खण्डगिरि की ओर थे तब सही पता नहीं लगने से वापिस गृह आना पड़ा। गृह में उथल-पुथल मची थी। किसी ज्योतिषी ने बता दिया था कि हजार किलोमीटर के आस-पास है

तुम्हारा बेटा अब आने की ओर है। कुछ लोगों ने आहार भी छोड़ रखा था। घर आने पर सबको खुशी हुयी और पारस के वैराग्य की सराहना के साथ घर-घर निमंत्रण होने लगे।

सन् 1984 में मढ़ियाजी जबलपुर में जब आचार्य श्री विद्यासागर जी अपने विशाल संघ सह वर्षायोग हेतु विराजमान हुए तब फिर बिना बोले गृह से निकलकर और गुरु के चरणों में बीस दिन तक रहकर सब भावनाएँ व निवेदन सुनाने का अवसर मिला पारस को। गुरुवर ने माता-पिता की आज्ञा प्राप्त करने की बात कही, लेकिन गृह के लोगों ने पकड़कर ले जाने की ठानी। आचार्य श्री के समक्ष बैठे हुए पारस को माँ ने हाथ पकड़कर खींचा और रोई तो आचार्य श्री को सहन नहीं हुआ, दुःख या मोह देखा नहीं गया माँ का; अतः उठकर वे बाहर चले गये। आखिर माता-पिता के इस आग्रह पर कि कुछ दिन और गृह पर साधना पर लो ऐसा आचार्य श्री ने कह दिया तब माता-पिता के इस आग्रह पर कि फिर हम भेज देंगे, गृह जाना पड़ा पारस को। गृह जाकर बी.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा दमोह के डिग्री कॉलेज से पास की और नमक त्याग की साधना व पर्व दिनों में व्रत एकासन व उपवास की साधना बढ़ाई। करीब 17 वर्ष की उम्र में मित्र युवाओं ने शायद इसलिए कि ये मित्र ना जाये नगर छोड़कर अतः श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़े मन्दिर के सेवा दल का अध्यक्ष बना दिया और कार्यालय सौप दिया तब उसी कार्यालय और मन्दिर में पद्म जैन (मलैया) को साथ लेकर, पारस चंद स्वाध्याय के साथ सामायिक करने का अभ्यास प्रारम्भ कर दिया था। ऐसे पारसचन्द तो अब अध्यात्मिक कविता लिखने में भी रुचि लेने लगे थे। उनकी जीवन की पहली कविताः-

दृष्टि बदली, सृष्टि बदली, बदल गया सारा जीवन मेरा,

हे महावीर ! करुणा के नायक
एक भव्य कहता है मुझ से
धन्य-धन्य भाग्य है तेरा
कब बदलेगा जीवन मेरा
तेरे मन में यही शल्य थी
कब मेरा मन वैरागी होगा
कब जगेगा आतम ज्ञान
जिससे होगा आत्म श्रद्धान

दृष्टि बदली सृष्टि बदली
बदल गया सारा जीवन मेरा

बचपन तेरा सुखमय बीता
स्वप्न सजे उमंगमय बीता
तेरे स्वप्न में था भगवना

जिसका किया तूने गुणगान
स्वप्न साकार हुये तेरे
यही भावना थी जो तेरी
स्वप्न साकारों का जीवन तेरा
सुख मय बीता सुखमय बीता
दृष्टि बदली सृष्टि बदली
बदल गया सारा जीवन मेरा
जिस घर में तेरा जन्म हुआ था
जिस माता ने जन्म दिया था
उस माता का स्वप्न था ऐसा
मेरा बेटा जिनमन्दिर जाये
जिनमन्दिर से वैराग्य को पाये
वैरागी होकर मोक्ष्य को जाये
धन्य-धन्य भाग्य है तेरा
माता के स्वप्न से दृष्टि बदली
दृष्टि बदली सृष्टि बदली
बदल गया सारा जीवन मेरा
ऐसे पिता ने बड़ा किया था
जिनको जीवन की चाह थी ऐसी
मेरा बेटा-वैरागी होगा
वैरागी होगा-आत्म-ध्यानी होगा
आत्म-ध्यान से मोक्ष पधारे
जिन पिता का स्वप्न था ऐसा
जिनको जीवन की चाह थी ऐसी
उन मात-पिता को वंदन सबका
जिनके स्वप्न से दृष्टि बदली
दृष्टि बदली सृष्टि बदली
बदल गया सारा जीवन मेरा
हे महावीर करुणा के नायक।
धन्य-धन्य भाग्य है मेरा।

पारसचन्द जैन, 2-8-84-गुरुवार

और आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी पर भी कविता लिखी थी वह इस प्रकार है कि

विद्यासागर जग के तारे

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग में न्यारे
सबके नयनों के दुलारे
कठोर तप की दृढ़ता वाले
व्याख्यानों की बोछरों से
अपने मार्ग पर बढ़ने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर की ज्ञान किरण का
उजियाला फैला सारे जग में
ज्ञान के उजियाला से
उपजा अब भविकों को ज्ञान
ली दीक्षा विद्या के सागर से
संघ बना एक बड़ा मुनिका
देकर ज्ञान किरण सभी को
जगा रहे हैं जग को सारे

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर हैं तप के धारक
जिसकी महिमा अपार हैं
जिस तप का पालन करते हैं
वह तप काँटों की राह है
विद्यासागर सारे भारत में
करते धर्म का विस्तार हैं
वन्दना करते सारे तीर्थों की
संयम तप का सहारा लेकर
अपने चारित्र की दृढ़ता वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

जग का राह दिखाने वाले
धर्म का पथ बतलाने वाले
अमृतवाणी गंगा को
जग में बहाने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर की बचपन की कहानी
इस संसार में है निराली
हुआ जब वैराग्य विद्यासागर को
तब त्याग दिया घर के मोह को
वे उन्नीस बरस की उम्र में ही
घर छोड़ बढ़े साधना की ओर
विषय भोगों से परे निराले
आतम ज्ञान को जगाने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर का वह ध्यान
इस सारे जगत में निराला था
उनका ध्यान लगा जब धर्म में
मात– पिता की आज्ञा लेकर
ब्रह्मचर्य व्रत दृढ़तम पाला था
पिच्छी कमण्डल धारण करके
सीधे मुनि हुये थे विरागी
मुनि पद की दृढ़ता रखने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर हैं ज्ञान के सागर
जिन्होंने गुरु के संग के रहकर
ज्ञान का अर्जन किया अपार
तब गुरु की पदवी मिली फिर गुरु से
विद्यासागर में जब जागा ज्ञान
तब करने लगे खूब व्याख्यान

वर्षायोग की धर्म प्रभावना

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य परम पूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ महावीर जयंती से श्रुत पंचमी तक गिरनार जी में ग्रीष्म कालीन वाचना दो मास तक ठहर करके की। पहाड़ की वंदनाएँ सानन्द रूप से करके दिनांक 30 मई 2012 को गिरनारजी से पूज्य महाराज जी ससंघ का विहार गुजरात के अन्य सिद्ध क्षेत्रों की वंदना हेतु हुआ। वहाँ से 150 कि.मी. का विहार करते हुये पालीताना की तलहटी में पहुँचे। नीचे मंदिर जी में और शत्रुंजय की पहाड़ी पर श्री 1008 शांतिनाथ भगवान के मंदिरजी में दर्शन किये। दो दिन की यात्रा पूर्ण करके पूज्य गुरुवर अतिशय क्षेत्र घोघा और भावनगर की और आगे बढ़े। भावनगर में सूरत आहुरा नगर से कनुभाई, रमेशभाई, प्रकाशभाई, अश्विनभाई, पंकजभाई आदि कई भक्तगण के रूप में सूरत आहुरानगर में चातुर्मास हेतु निवेदन करने हेतु पहुँचे और भावात्मक निवेदन करके एवं श्रीफल भेंट करके ऐतिहासिक चातुर्मास कराने के भाव पूज्य गुरुवर के चरणों में प्रदर्शित किये। उसी के एक सप्ताह ठीक बाद आहुरानगर से मुख्य पदाधिकारियों के साथ एक बस भरकर पूज्य मुनिवर श्री को ससंघ चातुर्मास हेतु निवेदन करने गये। जहाँ पूज्य गुरुवर ने आहुरानगर वासियों को प्रसन्नाता पूर्वक आशीर्वाद दिया तब भक्तजनों में खुशी की लहर आ गई और जय-जयकार की आवाज गूंजने लगी। वहाँ से बड़ोदा के किनारे से होते हुए अंकलेश्वर, सजोद, ओलपाड से विहार करते हुये 6 जुलाई सुबह की मंगल बेला में सूरत शहर के आहुरानगर में पूज्य गुरुवर ससंघ का प्रवेश हुआ। यह प्रवेश का नजारा कुछ अलग ही था। दिनांक 8 जुलाई रविवार के शुभ दिन पूज्य महाराज जी ससंघ का रजत वर्षायोग मंगल कलश स्थापना समारोह बहुत भव्य रहा पूरे सूरत के श्रेष्ठीजन एवं श्रावक-श्राविकाओं से यह समारोह स्थली (राम पावन भूमि) भीड़ से उभर गई सूरत के इतिहास में शायद ऐसा भव्य समारोह कभी नहीं हुआ हो। जिसमें रजत वर्षायोग मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य प्रथम रत्नत्रय कलश नरेश जी जैन सूरत (दिल्ली वाले) द्वितीय धर्म प्रभावना कलश जैन श्रीमती मंगलाबेन कचरालाल जी महेता परिवार एवं तृतीय वात्सल्य कलश जैन फोजमल जी कोदरलाल जी परिवार को प्राप्त हुआ पूरे चातुर्मास स्थापना के भव्य कार्यक्रम का मंच संचालन बा.ब्र. पंडितजी श्री अनिल भैया (भोपाल) एवं भरत कोठारी द्वारा सम्पन्न हुआ। पूज्य मुनिवर के चातुर्मास के भव्य कार्यक्रमों की रूपरेखा सुनते ही धर्म प्रभावना की लहर पूरे सूरत में चारों और फैल गई।

शुरू से ही पूज्य गुरुवर का प्रवचन प्रतिदिन सुबह 8.30 से होता रहा जिसकी प्रभावना जोरदार रही जिस कारण रजत चातुर्मास कमेटी ने दिनांक 25 जुलाई भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक से पूरे वर्षायोग हेतु भव्य विशाल पांडाल का निर्माण करवाया जिसमें भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक बड़ी

धूमधाम से मनाया गया। पूज्य गुरुवर को जैन संस्कृति का संवर्धन करना था, महाराज जी की सोच बहुत ऊँची थी उसी के फलस्वरूप नन्ने-मुन्ने बच्चों में संस्कार डालने हेतु दिनांक 29 जुलाई 2012 से आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला का उद्‌घाटन हुआ। जिसमें पाठशाला में एक साल के लिये अधिष्ठाता के रूप में मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य जैन डाह्यालाल चुन्नीलाल महेता परिवार को प्राप्त हुआ। इस प्रोग्राम में बहुत भव्यता पाई और पहले दिन से ही 125 से 150 बच्चे धार्मिक शिक्षा हेतु आने लगे। पूज्य महाराज जी के जादु से बच्चे होनहार होने लगे और धार्मिक ज्ञान-संस्कार का सिंचन हुआ जो पर्यूषण पर्व के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नजर आता रहा।

ज्ञातव्य रहे कि सन्1997 में जब आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ सूरत नगर में आये थे तब उनके ही कर कमलों से आहुरा नगर के पञ्चकल्याणक में हमारे जिनालय के जिन बिम्बों की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी तथा मानस्तम्भ के 8 जिन बिम्बों की प्राण प्रतिष्ठा 2004 में भोपाल पञ्चकल्याणक में धर्मप्रभावक मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुई थी।

पूज्य गुरुवर का प्रभाव और धर्म प्रभावना चारों दिशाओं में फैल रही है। जिसके फल स्वरूप सूरत में पहली बार षोडशकारण व्रत में 250 धर्म प्रेमियों ने सम्मिलित होकर शील-संयम के साथ शुद्ध आहार से एक उपवास-एक एकासन एवं कई लोगों ने एकासन करके व्रत अंगीकार करके धर्म प्रभावना की। ऐसी प्रभावना यहां से परम पूज्य आचार्य श्री तक लेकर हर जगह चर्चा का विषय बन गई। पूर्यषण पर्व ही आहुरा नगर, सूरत से करीब 55 लोगों ने डोंगरगढ़ जाकर प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का आशीर्वाद इस वर्षायोग की धर्मप्रभावनाके लिए लिया था जिसके ही प्रभाव से ऐसी प्रभावना में चार चाँद लगे। यहाँ नजारा से यह प्रतित होता है कि आहुरा नगर समवशरण में परिवर्तित हो गया हो। पूज्य मुनिवर की देशना का यह प्रभाव है। सुबह 6.00 बजे से अभिषेक और संगीतमय पूजाओं में विधानाचार्य श्रीमान भरतभाई महेता एवं निशा बहिन गांधी ने भी चार चांद लगा दिये। विधि विधान में ग्वालियर से पधारें हुये विधानाचार्य पं. श्री चन्द्रप्रकाश चन्दर जी से सम्पन्न होता रहा। उसके पश्चात् पूज्य गुरुवर की देशना श्रावक-श्राविकाओं को बड़ी प्रभावित करती रही है, साथ में पर्यूषण महापर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर में बहुत से लोग सम्मिलित होकर लाभ लेकर धन्य हुये। महाराज जी के प्रवचन कक्षा आदि से पूरे दिन का धार्मिक कार्यक्रम का लाभ मिला तथा ज्ञानवर्धक धर्ममय उपदेशों से भक्तों में त्याग की भावना बढ़ी। इस चातुर्मास ने पूज्य मुनिवर के भव्य चातुर्मास की गणना में स्थान ले लिया है।

कनुभाई महेता, आहुरानगर सूरत
महामंत्री आचार्य विद्यासागर तपोवन तारंगा, गुजरात

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे ....   अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

[1]घनमेकं द्वे अघने घनपदकृत्या भजेत्त्रिगुणयाघनतः ।
पूर्वत्रिगुणाप्तकृतिस्त्याज्याप्तघनश्च पूर्ववल्लब्धपदैः ॥५४॥

अत्रोद्देशकः

एकादिनवान्तानां घनात्मनां रत्नशशिनवाब्धीनाम् । [2]नगरसवसुखर्तुगजक्षपाकराणां च मूलं किम् ॥५५॥
गतिनयमदशिखिशशिनां मुनिगुणखर्त्[3]वैक्षिनवैखराग्नीनाम् ।
[4]वसुखयुगखाद्रिगतिकरिचन्द्रर्तूनां गृहाण पदम् ॥५६॥

१ यह श्लोक M में प्राप्य नहीं है । २ M गिरि । ३ M रसा । ४ M विधुपुरखरस्वरर्तुज्वलनधराणां ।

तीन अंकों के विभिन्न समूह में से एक अंक घन (cubic) और दो अघन (non-cubic) होते हैं । अघन अंक में घनमूल के वर्ग की तिगुनी राशि का भाग दो । अग्रिम अघन अंक में से, ऊपर प्राप्त हुए भजनफल को वर्गित करने से प्राप्त हुई राशि तथा पिछले घन अंक में से (घटाई गई अधिक से अधिक घनसंख्या के) घनमूल की तिगुनी राशि का गुणनफल घटाओ । और तब अग्रिम घन अंक को स्थिति में लाकर, उसमें से ऊपर प्राप्त हुए भजनफल का घन घटाओ । इस तरह स्थिति में लाकर प्राप्त हुए घनमूल अंकों की सहायता से पूर्व विधि उपयोग में लाओ ॥५४॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

१ से लेकर ९ तक की घन संख्याओं के घनमूल क्या होंगे ? ४९१३ और १८६०८६७ के घनमूल बतलाओ ? ॥५५॥ १३८२४, २६९२६०३७ और ६१८४७०२०८ के घनमूल निकालो ॥५६॥

(५३–५४) जिसका घनमूल निकालना होता है ऐसी दी गई संख्या में अंक नियमानुसार समूहों में विभक्त कर दिये जाते हैं । प्रत्येक समूह में अधिक से अधिक ३ अंक होते हैं; उनके नाम क्रमशः दाहिनी ओर से बाँई ओर : घन (अथवा वह जो घनात्मक होता है अर्थात् जिसमें से घन राशि घटाना होती है), शोध्य (अथवा वह जो घटाया जाता है) और भाज्य हैं । बाँई ओर का अंतिम समूह हमेशा तीन अंकमय नहीं होता । उसमें एक, दो, या तीन अंक तक रहते हैं । निम्नलिखित साधित उदाहरण से नियम स्पष्ट हो जावेगा ।

७७३०८७७६ का घनमूल निकालना—

```
                                 शो. घ.   भा. शो. घ.   भा. शो. घ.
                                 ७  ७      ३  ०  ८      ७  ७  ६
घ.........४³ =                   ६  ४
भा......४² × ३          = ४८) १३३ (२
                                  ९६
                                 ३७०
शो...२² × ३ × ४...         =   ४८
                                ३२२८
घ......२².........           =     ८
भा......४२² × ३... = ५२९२) ३२२०७ (६
                               ३१७५२
                                ४५५७
शो...६² × ३ × ४२............ = ४५३६
                                 २१६
घ....६³.................... =   २१६
                                   ×
                   ∴ घनमूल = ४२६ ।
```

यह नियम उल्लेख नहीं करता कि कौन से अंक घनमूल की संरचना करते हैं । पर यह अर्थ किया जाता है कि क्रिया में घन किये गये अंकों को क्रम से बाँई ओर से दाहिनी ओर रखने संख्या (घनमूल) प्राप्त होती है ।

चतुःपयोध्यग्निशराक्षिद्दष्टिहयेभखव्योमभयेक्षणस्य ।
वदाष्टकर्मोऽधिखघातिभावद्विवह्निरन्ध्रर्तुनगस्य मूलम् ॥५७॥
द्रव्याश्वशैलदुरितखवह्न्यद्रिभयस्य वदत घनमूलम् ।
नवचन्द्रहिमगुमुनिशशिलब्ध्यम्बरखरयुगस्यापि ॥५८॥
गतिगजविषयेषुविधुस्वराद्रिकरगतियुगस्य भण मूलम् ।
लेख्याश्वनगनवाचलपुरस्वरनयजीवचन्द्रमसाम् ॥५९॥
गतिखरदुरितेभाम्भोधिताक्ष्यंध्वजाक्षद्विकृतिनवपदार्थद्रव्यवह्नीन्दुचन्द्र–
जलधरपथरन्ध्रेष्वष्टकानां घनानां गणक गणितदक्षाचक्ष्व मूलं परीक्ष्य ॥६०॥

इति परिकर्मविधौ षष्ठं घनमूलं समाप्तम् ।

संकलितम्

सप्तमे संकलितपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—
रूपेणोनो गच्छो दलीकृतः प्रचयताडितो मिश्रः । प्रभवेण पदाभ्यस्तः संकलितं भवति सर्वेषाम् ॥६१॥
प्रकारान्तरेण धनानयनसूत्रम्—
एकविहीनो गच्छः प्रचयगुणो द्विगुणितादिसंयुक्तः । गच्छाभ्यस्तो द्विहृतः प्रभवेत्सर्वत्र संकलितम् ।६२।

१ यह श्लोक M में अप्राप्य है ।

२७००८७२२५३४४ और ७६३२९४०४८८ के घनमूल प्राप्त करो ॥५७॥ ७७३०८७७६ और २६०९१७१११९ के भी घनमूल निकालो ॥५८॥ २४२७७१५५८४ और १६२६३७९७७६ के घनमूल निकालो ॥५९॥ हे गणक ! यदि तुम गणित में कुशल हो तो ८५९०११३६९९४५९४८८६४ घनराशि का घनमूल परीक्षा से निकालकर बतलाओ ॥६०॥

इस प्रकार, परिकर्म व्यवहार में घनमूल नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

संकलित [श्रेढियों का संकलन]

परिकर्म क्रियाओं में सप्तम संकलित क्रिया सम्बन्धी नियम निम्नलिखित है—

पहिले श्रेढि के पदों की संख्या को एक द्वारा घटाया जाता है और तब प्राप्त फल को आधा कर प्रचय द्वारा गुणित किया जाता है । इसे, जब श्रेढि के प्रथम पद के साथ मिलाकर पदों की संख्या से गुणित करते हैं तो समान्तर श्रेढि के समस्त पदों का योग प्राप्त होता है ॥६१॥

दूसरी तरह से श्रेढि का योग प्राप्त करने का नियम—

श्रेढि के पदों की संख्या को एक द्वारा ह्रासित कर प्रचय द्वारा गुणित करते हैं । प्राप्त फल में श्रेढि के प्रथम पद की दुगुनी राशि मिलाते हैं; और जब इस योग को श्रेढि के पदों की संख्या से गुणित कर दो से भाजित करते हैं, तो सर्वत्र श्रेढि का योग उत्पन्न होता है ॥६२॥

(६१) यह नियम बीजीयरूप से निम्नलिखित रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है—

$\left(\frac{न - १}{२} ब + अ\right) न = य$, जहाँ अ प्रथम पद है; ब प्रचय है, न पदों की संख्या है और य समस्त श्रेढि का योग है ।

(६२) इसी तरह, $\left\{\frac{(न - १) ब + २ अ}{२}\right\} न = य$ होता है ।

क्रमशः ....

मुक्ति के योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव

- शिवचरनलाल जैन मैनपुरी

जे जाया झाणग्गिए कम्म कलंक डहेवि।
णिच्चु णिरंजणु णाणुमय ले परमप्प णवेवि॥
परमात्मप्रकाश 1॥

प्रस्तावना- षड्द्रव्यमय विश्व में जीव दो रूपों में पाया जाता है। संसारी और मुक्त। जो पुद्गलमय कर्म बन्धन से सहित होकर जन्म-मरण के चक्र में नाना योनियों में भ्रमण कर चतुर्गति दुःख भोग रहे हैं वे संसारी हैं। जो कर्मबन्धन से मुक्त होकर अष्ट गुण सहित और अन्तिम शरीर से किंचित् न्यून आकार में लोक शिखर पर विराजमान हैं, पुनः जन्म धारण कर संसार में प्रत्यावर्तन नहीं करते वे मुक्त जीव या सिद्ध परमात्मा हैं। बन्ध के कारणों का अभाव होने तथा सम्पूर्ण कर्मों की निर्जरा द्वारा मोक्ष की सिद्धि होती है।

इस प्रक्रिया को या मोक्षोपयोगी प्रयत्न को सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की एकता रूप परिणति कहते हैं। आत्मा के जिन परिणामों से सम्पूर्ण कर्मों से पृथक्त्व रूप होता है वह भाव मोक्ष है। यह उपर्युक्त प्रकार से कथित मोक्ष रूप अथवा द्रव्यमोक्ष का कारण होता है।

यह भी ज्ञातव्य है कि यह मोक्ष भी तीन भेदों में विभाजित किया जा सकता है[1]। जीव मोक्ष, पुद्गल मोक्ष, उभयमोक्ष । बन्ध अवस्था से मुक्त होकर जीव का अपने शुद्ध स्वरूप में अवस्थित होना जीवमोक्ष है। पुद्गल कार्माण वर्गणायें कर्म अवस्था से रहित हो मात्र मूल रूप में हो जाती हैं, यह पुद्गल मोक्ष या अजीव मोक्ष है। जीव अजीव समन्वित दोनों रूपों को एक साथ देखें तो उभयमोक्ष है। यहाँ तात्पर्य जीवमोक्ष से है।

प्रत्येक कार्य अपने योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव रूप स्वचतुष्टय के द्वारा निष्पादित होता है। बिना योग्य सामग्री या कारणों की समष्टि के, योग्यता रखता हुआ भी कोई पदार्थ कार्य करने में असमर्थ है। जैसे वृक्ष बनने हेतु बीज को निम्न चतुष्टय की आवश्यकता है।

1. बीज का स्वस्थ रूप द्रव्य
2. उसके योग्य उर्वरा मिट्टी युक्त क्षेत्र, आर्द्रता।
3. योग्य काल, मौसम जैसे आम के लिए जून-जुलाई का समय।
4. बीज के वृक्षत्व रूप परिणमन की शक्ति आदि।

उसी प्रकार आत्मा को मुक्ति प्राप्त करने हेतु द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव रूप उपयुक्त चतुष्टय की आवश्यकता है। इनमें कुछ कारण या सामग्री अन्तरंग रूप होती है, कुछ बाह्य रूप में । इस विषय में आचार्य समन्तभद्र स्वामी का निम्न उल्लेख आगम प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करना अप्रासंगिक न होगा-

बाह्येतरोपाधिसमग्रतेयं, कार्येषु ते द्रव्यगत स्वभावः।
नैवान्यथा मोक्षविधिश्च पुंसां, तेनाभिवन्द्यस्त्वमृषिर्बुधानाम्॥ स्वयंभू-60॥

- हे भगवन् बाह्य अर्थात् अपेक्षित निमित्त कारण और अन्तरंग उपादान कारण दोनों की समग्रता कार्यों को सम्पन्न करती है यह द्रव्यगत स्वभाव है। अन्य प्रकार नहीं। इसके बिना तो मोक्ष की विधि ही मनुष्यों को नहीं है। आपने यह प्रकट किया है अतः आप ज्ञानी जनों द्वारा अभिवन्द्य हैं।

उपर्युक्त मुक्ति योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव रूप चतुष्टय को दो रूपों में विश्लेषित करना उपयोगी होगा।

1. साक्षात् चतुष्टय 2. परम्परा चतुष्टय।

साक्षात् चतुष्टय मुक्ति अवस्था से अनन्तर एक समय पूर्ववर्ती कारण समयसार रूप है। परम्परा चतुष्टय सम्यक्त्व सन्मुख जीव की प्रारम्भिक अवस्था से लेकर साक्षात् चतुष्टय से अनन्तर पूर्ववर्ती कहा जा सकता है।

साक्षात् द्रव्यरूप- साढ़े तीन हाथ अवगाहना से लेकर 525 धनुष तक अवगाहना युक्त शरीराकार में परिणत, आकाश प्रदेशों व आत्मप्रदेशों में विस्तृत जीवद्रव्य। चार घातिया ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्म के बन्धन से रहित, परमौदारिक स्फटिकवत् निर्लेप शरीर के साथ आत्मतत्त्व का अवस्थान। यह चौदहवें अयोगकेवली गुणस्थान का अन्तिम समय का रूप है। उसमें जीवन्मुक्त परमात्मा के साथ 13 प्रकृतियों की सत्ता होती है। जैसे दूध के फट जाने पर उसमें जलीय अंश यद्यपि है तथापि वह अलग छँटा हुआ होता है, वैसे ही कर्म प्रकृतियों की मिलावट है तथापि अयोगि दशा होने के कारण आत्मा उनसे छँट जाता है अनन्तर हटकर, पृथक् हो मुक्त हो जाता है। इस गुणस्थान में अघातिया कर्मों का अति मन्द उदय है। वह जीव को अनुपम, अचल, ध्रुव होने में बाधक है।

परमात्म दशा होने में अभी कार्य शेष है। मुक्ति योग्य, द्रव्य पुरुष वेदी होना आगम में आवश्यक कहा गया है। भाव वेद की अपेक्षा आत्म द्रव्य की तीनों वेदों में मुक्ति स्वीकार की गई है। वज्रवृषभनाराच संहनन के अस्तित्त्व में शरीर स्वीकृत है। पुरुषाकार, छायावत्, आकाशवत् आत्मप्रदेशों की स्थिति में मुक्ति की योग्यता है।

ज्ञातव्य है संसार में कर्मबन्धन की अपेक्षा जीव मूर्तिक है। जीव में अमूर्त स्वभाव के साथ

मूर्तस्वभाव भी स्वीकार किया गया है। अतः चौदहवें गुणस्थान की अयोगि अवस्था में अन्त समय में वह मूर्तिक है। मूर्तिक जीवद्रव्य में अमूर्तिक स्वरूप सिद्ध पर्याय प्रकट करने की योग्यता है। अमूर्तिक को अमूर्तिक मुक्ति पर्याय की उत्पत्ति का असद्भाव है एवं 18दोषों से रहित निर्दोष आत्मद्रव्य मुक्ति का अधिकारी है।

मुक्ति के योग्य परम्परा द्रव्य

मुक्ति औदारिक शरीर सहित जीव को प्राप्त होती है। अन्य शरीर से नहीं। इसी में उत्कृष्ट रत्नत्रय की योग्यता है। उत्कृष्ट धर्म-ध्यान एवं चारों शुक्लध्यान औदारिक या परमौदारिक शरीर में स्थित आत्मा को होता है। ऊपर अवगाहना का उल्लेख किया ही है। विशेष यह है कि केवली समुद्घात की अवस्था में जीव प्रदेश फैलकर दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरण रूप होते हुए लोकाकाश के बराबर हो जाते हैं, तीन लोक में व्याप्त होते हैं। इस दृष्टि से लोकाकाश प्रमाण अवगाहना से भी मुक्ति परम्परा से प्राप्त होती है। किन्तु जब जीव मुक्त होता है तब संकोच से प्रदेश लोक व्यापी नहीं होते। व्यञ्जन पर्याय मुक्तजीव की चरम शरीर से कुछ न्यून होती है। ऊर्ध्वगमन स्वभाव से सिद्धशिला पर जाकर वज्रशिला निर्मित अभग्न प्रतिमा के समान अभेद्य रूप में टंकोत्कीर्ण स्वभाव से आत्मा स्थित हो जाती है।

प्रत्युत्पन्न नय से मनुष्य गति से तथा भूत प्रज्ञापन नय से चारों गति से मुक्ति प्राप्ति संभव है। निर्ग्रन्थ लिंग से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। कहा भी है-

णवि सिज्झइ वत्थधरो जिणसासणे जइ वि होइ तित्थयरो।

णग्गो वि मोक्खमग्गो सेसा उम्मग्गया सव्वे॥

जिनशासन में वस्त्रधारी यदि तीर्थंकर भी हो तो मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। नग्नता ही मोक्षमार्ग है, शेष सभी उन्मार्ग हैं।

तीर्थंकर पदवी से अथवा सामान्य जीवद्रव्य में मोक्ष की योग्यता है जीव तीन प्रकार के हैं-भव्य, अभव्य एवं दूरान्दूर भव्य। इनमें से भव्य जीव ही मुक्ति के योग्य है। करणलब्धि परिणत प्रथम गुणस्थान से लेकर अपेक्षित रूप से चौदहवें गुणस्थान तक सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप परिणत जीव में मोक्ष की योग्यता है। यह योग्यता बहिरंग और अंतरंग कारणों की (निमित्त उपादान) की समष्टि से प्रकट होती है।

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति हेतु भव्यता, साकारोपयोग (ज्ञानोपयोग) संज्ञी पर्याप्तक, जाग्रत अवस्था युक्त आदि जिन विशेषताओं की आवश्यकता है उनसे युक्त जीव द्रव्य मुक्ति की योग्यता रखता है। परम्परा रूप से देखें तो मोक्षमार्ग के योग्य अथवा मोक्ष के योग्य होना एक ही रूप में सार्थक है।

क्रमशः.........

आधुनिक विज्ञान और सम्यग्ज्ञान

प्राचार्य पंडित निहालचंद जैन

सम्यग्दर्शन के बाद सम्यग्ज्ञान का क्रम रखा गया है। इस क्रम की अपनी वैज्ञानिकता है। ज्ञान में सम्यक्त्व विशेषण, सम्यग्दर्शन के बाद आता है। बिना सम्यग्दर्शन के ज्ञान मिथ्या-ज्ञान है। मिथ्या ज्ञान से ताप्तर्य है-संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय से सहित ज्ञान। सम्यग्दृष्टि का ज्ञान ही सम्यग्ज्ञान माना गया है। यह ज्ञान हेय को हेय और उपादेय को उपादेय समझता है। मिथ्याज्ञानी भले ही अपनी स्त्री को स्त्री और माँ को माँ समझता है, परन्तु उसके ज्ञान में विभ्रम और संशय का सम्पुट होने से वह मिथ्याज्ञान है। सम्यग्ज्ञान के बाद सम्यक्चारित्र का क्रम रखा गया है, क्योंकि चारित्र की भूमिका में ज्ञान होना आवश्यक है। सम्यग्ज्ञान से विवेक और भेदविज्ञान प्राप्त होता है तथा चारित्र की भूमिका बिना भेदविज्ञान के नहीं हो सकती।

आत्मा में अनन्त गुण है किन्तु उन गुणों में ज्ञानगुण ही ऐसा है जो स्व-पर प्रकाशक है। सम्यग्ज्ञान वह प्रकाश है जिसके द्वारा आत्मावलोकन ही नहीं अपितु समस्त लोक के षड्द्रव्यों की गुण व पर्यायों को प्रत्यक्ष या परोक्ष दोनों रूपों से जानता है। गोम्मटसार जीवकाण्ड में निम्नलिखित गाथा से स्पष्ट है-

जाणई तिकाल विसए दव्व गुण पज्जए य बहु भेय।
पच्चक्ख च परोक्ख अणेण णणित्ति ण वेत्ति॥299॥

श्रुत (शास्त्र) सम्यग्ज्ञान रूप होता है। देव और गुरु के मध्य द्रव्यश्रुत प्रतिष्ठित है। अर्हन्तदेव-केवलज्ञान के साक्षात् भास्कर हैं।

गुरु की गुरुता ज्ञान से मण्डित होती है। सम्यग्ज्ञान के आलोक में उपाध्याय आगम का व्याख्याकार बनता है और ज्ञान की श्रेष्ठता को उपलब्ध आचार्य अपने संघ का मार्गनिर्देशन, प्रवचन, स्वाध्याय आदि के द्वारा तपाग्नि से तपाकर परिशुद्ध करता है। सम्यग्ज्ञान, साधु के मूलगुणों में दोष या अतिचार नहीं लगने देता है अतः सम्यक्चारित्र में परम सहायक सम्यग्ज्ञान है या कहें कि सम्यक्चारित्र रूपी पक्षी के दो पंख हैं- सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान जिनका अवलम्बन लेकर गुणस्थानों की ऊँचाईयाँ चढ़ता हुआ सर्वज्ञता के आकाश में विचरण करता है।

आत्मविकास में सम्यग्ज्ञान की विशिष्ट भूमिका है।

इसी भावना को एक कवि (श्री मिश्री लाल जी गुना) ने एक काव्यात्मक धारा में प्रस्तुत किया है-

मनुज के दो नयन हैं अंक अक्षर,
नयन हैं व्यर्थ उसके जो निरक्षर।
ज्ञान का लक्ष्य है चारित्र धारण,
अन्यथा ज्ञान जाता है अकारथ।
ज्ञान निर्दोष, अक्षयकोष सुख का,
मृदु मकरंद आत्मा के कमल का॥

सम्यग्ज्ञान परमसुख का कोश क्यों है ? वस्तुतः दुःख के तीन कारण हैं–

1. विषयों की चाह

2. जन्म–मरण कृत दुख

3. मोह का सद्भाव

यदि जीव इन तीनों का विनाश कर दे तो उसे अविनाशी सुख की प्राप्ति हो सकती है। इस तथ्य को दर्शनपाहुड में स्वामी कुन्दकुन्द देव ने इस प्रकार कहा–

जिणवयण मोहसमिणं, विसयसुह विरेयणं अमिदभूयं।
जर मरण वाहिहरणं, खयकरणं सव्वदुक्खाणं॥17॥

भगवान जिनदेव की दिव्यवाणी विषय सुखों का परित्याग कराती है, जन्म, जरा, मरण की व्याधि का हरण करती है तथा मोह का शमन करके सर्वदुःखों का विनाश करती है–कविवर पं. दौलतराम ने कहा है–

ज्ञान समान न आन जगत में, सुख को कारण।
यह परमामृत जन्म जरा दुख रोग निवारण॥

आगे पं. दौलतराम बड़ी सूक्ष्म बात सरल शब्दों में कह रहे हैं–

त्रिगुप्तिपूर्वक चारित्र धारण कर साधक ज्ञानी अपनी ज्ञान आराधना से एक श्वास मात्र में जितने कर्मों की निर्जरा कर लेता है, अज्ञानी कोटि–कोटि भवों में उतने कर्मों की निर्जरा कर पाता है। कर्मों की निर्जरा सच्चे सुख की कसौटी है, मापदण्ड है। स्वाधीनता का सुख, कर्मों से निर्भर होकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

कोटि जन्म तप तपें ज्ञान बिन कर्म झरे जे।
ज्ञानी के छिनमाहीं त्रिगुप्ति ते सहज टरें ते॥

निश्चित ही उक्त पद प्रवचनसार की इस गाथा का काव्यानुवाद ही है-

जं अण्णाणी कम्मं खवेदि, भवसय सहस्स को- डीहि।
तं णाणी तिहि गुत्तो खवेई उरसा समेत्तेण ।।238 ।।

सम्यग्ज्ञान किसे कहें ? आचार्य समन्तभद्र रतनकरण्डक श्रावकाचार में श्लोक कहते हैं-

अन्यून, मनतिरिक्तं, यथातथ्यं, बिना च विपरीतात्।
निसन्देहं वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिनः ।।42 ।।

सम्यग्ज्ञान की यह परिभाषा बड़ी वैज्ञानिक है, विज्ञान तथ्यपरक और कार्यकारण भाव से सहित निष्कर्ष और प्रमेयों को अपनी स्वीकृति देता है। जैनदर्शन में उस ज्ञान को सम्यग्ज्ञान माना है जो न्यूनता, अधिकता, विपरीतता और संदेह से रहित है। कार्यकारण सिद्धान्त से विपरीतता और संदेह का दोष नहीं रहता जबकि तथ्यपरकता से न्यूनता और अधिकता के दोष का परिहार हो जाता है। आचार्य नरेन्द्रसेन ने सिद्धान्तसार ग्रन्थ में सम्यग्ज्ञान को इस प्रकार व्याख्यापित किया है।

सम्यग्ज्ञानं परंज्योतिः स्वपरार्था-व भासकम्।
आत्म स्वभाव मा-भाव्यं भावयन्ति भवातिगा ।।
बोधो बुद्धिस्तथा ज्ञानं प्रमाणं प्रमिति प्रभा।
प्रकाशश्चेति नामानि मन्यते मुनयोऽन्वयात् ।।2/12

जिस प्रकार दीपक स्वअपने को प्रकाशित करता हुआ अन्य पदार्थों को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार आत्मस्वभावी सम्यग्ज्ञान भी अपने आत्मस्वरूप के साथ अन्य परपदार्थों का अनुभव करता है। सम्यग्ज्ञान की सम्पूर्णता केवल-ज्ञान में समाहित है इसलिए इसे बोध बुद्धि, प्रमाण, प्रमिति, प्रभा, प्रकाश आदि नामों से संज्ञित करते हैं। जो स्वयं अपने को व अन्य पदार्थों को जानता है वह ज्ञान है। परीक्षामुख में-स्वयं अपने और पर पदार्थों के निश्चय करने वाले ज्ञान को प्रमाण कहा गया है। सम्यग्ज्ञान को प्रमाण कहते हैं।

प्रत्यक्षप्रमाण के दो भेद हैं- 1. प्रत्यक्ष प्रमाण 2. परोक्ष प्रमाण

बिना किसी बाह्य आलम्बन के होने वाला स्वाधीन ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान या प्रत्यक्ष प्रमाण कहलाता है। प्रत्यक्ष प्रमाण के दो भेद हैं- पारमार्थिक प्रत्यक्ष और सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष। पारमार्थिक प्रत्यक्ष- में किसी प्रकार के माध्यम या व्यवधान की उपस्थिति नहीं होती। यह सीधा आत्मसाक्षात्कार है। पारमार्थिक प्रत्यक्ष दो प्रकार का होता है-

क्रमशः............

आगम और अलंकारमय तीर्थोदय काव्य

पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश' गंजबासौदा

''पुण्य पुञ्ज बिन मिलहिं न सन्ता''

महाकवि तुलसीदास का यह कथन अनुभव सिद्ध है कि ''पुण्य पुञ्ज बिन मिलहिं न सन्ता'' क्योंकि हमारी समाज को सन् 2004 में विशेष श्रद्धा एवं ज्ञान पिपासा तृप्ति के निमित्त से महीनों की दौड़-धूप के पश्चात् टी.टी. नगर भोपाल के निवासियों को केवल पुण्यप्राबल्य के कारण संतशिरोमणि परम पूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य पूज्य 108 मुनि श्री आर्जव सागर जी महाराज का चातुर्मासिक मंगल सान्निध्य बड़े सौभाग्य से प्राप्त हो गया। भोपाल वासियों के सौभाग्य की जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

परम पूज्य 108 श्री आर्जव सागर जी मुनि महाराज आचार्य श्री समन्तभद्र जी द्वारा प्रतिपादित सच्चे गुरु की निकष ''विषयाशावशातीतो, निररम्भरोपरिग्रहः। ज्ञानध्यानतपोरत्नः तपस्वी सः प्रशस्यते॥'' के जीवन आदर्श हैं। आप चतुर्थ कालीन श्रमण चर्या के निरन्तर पालक हैं, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग में निरत रहते हैं, अखण्ड ब्रह्मचर्य का तेज उन्हें धरा का मार्तण्ड उद्घोषित करता है। वे ज्ञान के भण्डार, रससिद्ध कवि, सरल स्वभावी मृदुभाषी संत हैं आपकी प्रवचन शैली में उभय नयों का समीचीन प्रयोग होता है अभीक्ष्णज्ञानोपयोगिता के फलस्वरूप आपकी अमृत लेखनी से अनेक कृतियाँ प्रसून हुईं हैं। उनमें से एक सुकृति है ''तीर्थोदय काव्य'' जिसे हम ''तीर्थोदय सत सई'' भी कह सकते हैं।

तीर्थोदय काव्य को मैंने आद्योपान्त ध्यान से पढ़ा है। इसमें 6 सोपान 90 उपशीर्षक एवं 700 पद्य हैं। प्रथम सोपान मंगल भूमिका स्वरूप है जो मोक्षमहल को मजबूती प्रदान करती है। इसमें सोलह कारण भावनाओं का वर्णन है। द्वितीय सोपान में समीचीन दृष्टि शीर्षक के अन्तर्गत सम्यग्दर्शन का सांगोपांग वर्णन 23 उप शीर्षकों में किया गया है। तृतीय सोपान में सम्यक्वृत्ति शीर्षक से 23 उपशीर्षकों द्वारा विनय, अणुव्रत, श्रावक की ग्यारह प्रतिमायें, गुणव्रत, शिक्षाव्रतादि का वर्णन है। चतुर्थ सोपान में विमोचन दृष्टि शीर्षक से 12 उपशीर्षकों द्वारा ज्ञान, तप, त्याग, समाधि आदि भावनाओं का वर्णन किया गया है। पंचम सोपान में सद्भक्ति शीर्षक से अर्हद्भक्ति आदि भावनाओं का वर्णन है। षष्ठ सोपान समुन्नति का सोपान है। ग्रन्थ के उपसंहार सिद्धात्मा, षोडशकारणव्रत की विधि, सार एवं उद्देश्य का कथन कर ग्रन्थ को पूर्णता प्रदान की गई है। संक्षेपेण तीर्थोदय काव्य में जैनागम से सम्बन्धित चार अनुयोगों की आवश्यक सामग्री को व्यवस्थित रूप से सजाया गया है। रत्नकरण्डक श्रावकाचार, छहढाला, मोक्षशास्त्र इत्यादि ग्रंथों की पूर्ति अकेला यह ग्रन्थ करता है। इसे हम जैनागम का सार-ग्रन्थ कह सकते हैं। गद्य की अपेक्षा पद्य एवं संस्कृत-प्राकृतादि भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी जन सामान्य की रुचि के अधिक अनुकूल होती है। अतः मुनिश्री का यह करुणापरक उपकारी आशीष सर्वजनहिताय

मंगलप्रद है। मुझे विश्वास है कि जो जिज्ञासु इसे आत्मसात्-सह कण्ठस्थ कर लेंगे वे जैनागम के उत्तम विद्वान बन जायेंगे ।तीर्थोदय का वर्ण्य विषय साहित्य न होकर आगम है। साहित्य को कविता में कहना सरल होता है किन्तु आगम को काव्य में निरूपित करना कठिन है। दार्शनिक शब्दों परिभाषाओं को छन्द के सांचे में ढालकर मूल आत्मा की रक्षा करते हुए सुष्ठु एवं सम्पूर्ण अभिव्यक्ति दे पाना किसी कुशल कवि एवं आगमनिष्णात विद्वान् के द्वारा ही संभव है किन्तु यहाँ यह दृढ़ता के साथ कहा जा सकता है कि आगम के गहन-गंभीर विषयों एवं लम्बे-लम्बे दार्शनिक शब्दों का वर्णन मुनिश्री की नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के द्वारा सुन्दररीत्या सम्पादित हुआ है। मुनिश्री पिंगल शास्त्र के उच्चकोटि के विद्वान् हैं। अतः पद्यों में सर्वत्र कसावट है। आपका शब्द कोष विपुल एवं विशाल है।

अतः अभिव्यक्ति में सर्वत्र स्पष्टता, सरलता, सहजता एवं चारुता के दर्शन होते हैं। कविता कामिनी विविध अलंकारों से मंडित है। सर्वत्र शान्त रस का साम्राज्य है। प्रसाद गुण के कारण भाव सहज ही आत्मसात् हो जाते हैं। अभिव्यक्ति की ऋजुता ने काव्य को सरल, एवं सर्वतोभद्र बना दिया है। निश्चित ही समाज इससे अत्यधिक लाभान्वित होगी। इस कृति का एक वैशिष्ट्य यह भी है कि आगमिक विषयों को आधुनिक एवं लौकिक उदाहरणों द्वारा सुग्राह्य बनाया गया है, जो अन्यत्र देखने में नहीं आता अस्तु।

''तीर्थोदय'' की काव्यकला''

संत साहित्य एवं ''तीर्थोदय - काव्य''-भारतीय संस्कृति के इतिहास में सन्त साहित्य का अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान रहा है। इन सन्तों ने जहाँ एक ओर अपनी साधना तथा तपस्या के बल पर आत्मकल्याण किया है वहीं दूसरी ओर स्वकीय अज्ञानता के कारण भटके हुये समाज को भी कल्याणकारी दिशा प्रदान की है।

आज के इस भौतिकवादी युग में कनक-कामिनी एवं कादम्बरी के महामोह मद से मूर्च्छित मानव को ऐसी सत्साहित्य रूपी संजीविनी की आवश्यकता है जो उसके ज्ञानचक्षुओं को उन्मीलित कर उसे सन्मार्ग पर अग्रसर कर सके।

यह परम सौभाग्य की बात है कि इस पञ्चमकाल में आज भी दिगम्बराचार्य एवं मुनिगण विद्यमान हैं जो प्राणी मात्र का कल्याण अपने ज्ञान, प्रवचन, चर्या, करुणा एवं साहित्य रचना से कर रहे हैं। ऐसे ही एक दिगम्बर संत हैं परमपूज्य 108मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज जो वर्तमान के वर्द्धमान, पञ्चाचार युक्त, महाकवि, कुन्दकुन्द की परम्परा के उन्नायक, संत शिरोमणि परमपूज्य 108आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य, परम तपस्वी, अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी शिष्य हैं। साहित्य सपर्या में सतत् निरत रहते हुये मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज ने धर्मभावना शतक, जैनागम संस्कार, परमार्थ साधना जैसे अनेक मोक्षमार्गोपयोगी ग्रन्थरत्नों की रचना की है। ''तीर्थोदय-काव्य'' भी आपकी एक अमूल्य कृति है। यह एक एसी मणि है जिसका प्रत्येक पहलू मोक्षपथानुगामी भव्य के लिये प्रकाश स्तम्भ है।

क्रमशः............

अभीक्ष्ण संवेग में जगत् के स्वरूप का चिन्तन

प्रोफेसर एल.सी. जैन

संवेग एवं जगत् स्वरूप के प्रसंग में जो तत्त्वार्थसूत्र तथा अन्यत्र से शब्द जिस संदर्भ में आए हैं उनमें मुख्यतः दो सूत्रों का उल्लेख इस प्रकार है-

1. दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नताशीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग संवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधु समाधि वैयावृत्त्यकरणमर्हदाचार्य बहुश्रुत प्रवचनभक्ति रावश्यकपरिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचन वत्सलत्व मितितीर्थंकरत्वस्य ॥ ॥6:24 पृ. 260 स.सि. ॥

तथा

2. जगत्काय स्वभावौ वा संवेग वैराग्यार्थम् ॥ 7:12 पृ. 270 स.सि. ॥

प्रथम भावना तीर्थंकर पदवी को इंगित करती है, द्वितीय ज्ञेय के समग्र को संवेग से जोड़ती है। अहिंसा अथवा रागद्वेष की समाप्ति की पराकाष्ठा तक ले जाती प्रतीत होती है।

इस प्रकार उपरोक्त विषय में जहाँ एक ओर आधुनिक मनोविज्ञान में संवेग की अवधारणा में नये रहस्य का हम उद्घाटन कर रहे होते हैं, वहीं खगोल विज्ञान के क्षेत्र में जगत् के समग्र स्वरूप का ज्ञेय रूप में श्रुत केवलज्ञान की साक्षी में आगे बढ़ते हैं। निश्चित रूप से हमें उस दिशा में इस दार्शनिक चिन्तन को ले जाना होता है, जिस ओर नोबेल पुरस्कृत बरट्रेण्ड रसैल ने यूनानियों में गणितीय दर्शन का विश्व में प्रथम बार अवलोकन कर उसे अपनी अद्वितीय प्रतिभा से प्रिंसिपिया मेथामेटिका में विस्तार रूप से प्रस्तुत किया था। किसी भी मूल सिद्धान्त (Principle) या विस्तृत सिद्धान्त (Theory) में प्रामाणिकता, अटूटता, निर्विवादिता तभी प्रवेश कर पाती है जब कि उसे गणित के सूत्रों में पिरोया जाये। जगत के स्वरूप में कर्म सिद्धान्त की मौलिकता और उसमें भी गणित का आच्छादन, जैनधर्म भावना में एक नये आयाम व विद्या के रूप में लाये गये जो प्रतीकमय साधनों, सूत्रों द्वारा और भी गहरे ज्ञान के लिए अत्यन्त विलक्षण और अप्रतिम पाये गये।

मुनिपुंगव श्री आर्जवसागर जी द्वारा तीर्थोदय काव्य की रचना में, मुरजबंध दोहों में भी तीर्थंकर प्रकृति, जो सम्यक्त्व से लेकर आठवें गुणस्थान तक, केवली या श्रुत केवली के पादमूल में बंधन को प्राप्त हो सकती है, कुछ विशेष रूप से संवेग भावना होते जगत् के स्वरूप का चिन्तन निम्न रूप में प्रस्तुत किया है-

तीन लोक में कहाँ कौन है, कैसे सुख-दुख मिले यहाँ ?
किस करनी का क्या फल होता, कैसे शिवपद मिले यहाँ ?

जब स्वरूप का ऐसा चिंतन, जब भविजन नित करते हैं।
वे ही इस संवेग भावना से भवसागर तिरते हैं॥
मुनिवर भव से भयशाली हैं, तीरथ पथ में सदा चलें।
नहीं जगत के बंधन में वे, नहीं किसी से बंधे चलें॥
रहें आत्मा के बंधन में, चलें सिंह सम निर्भय जो।
कर्मबंध से डरें निरंतर, ना करते दुःख में भय जो॥

वस्तुतः सभी प्रकार के इन संकटों के भय से विमोचित करने वाले ऐसे तीर्थंकर प्रकृति के बंध हो जाने पर ऐसी तीर्थंकर बनाने वाली ये भावनाएँ बड़ा महत्त्व रखती हैं। प्रश्न है कि ये भावनाएँ कर्म निरपेक्ष हैं या कर्म सापेक्ष? जो लकीर का फकीर नहीं है, वह ही यह उपक्रम करता है-

''लीक लीक गाड़ी चले, लीकई चले कपूत, ये तीनों ऊमठ चलें, शायर सिंह सपूत।''

साधारणतः हमें पहले मन और चेतना में भेद करना सीखना होता है। जहाँ मन, वचन, काय योग में निमित्त होते हैं, वहाँ चेतना के तीन रूप देखने में आते हैं- कर्मफल चेतना, कर्म चेतना और ज्ञान चेतना। चिंतन मन के आलम्बन से होता है। एक मन उस मस्तिष्क से सम्बन्ध रखता है जो प्रशासकीय क्षमता की ओर बढ़ता है, दूसरा भाग विद्वत्ता की ओर बढ़ता है। जो विद्वत्ता की ओर बढ़ता है वह पुनः दो दिशाओं में से किसी एक को चुनता है या तो वह तर्क की गहराई व विशालता की ओर बढ़ता चला जाता है अथवा यह प्रज्ञा द्वारा ली गई छलांगों द्वारा अल्पसमय में आनुमानिक नतीजों पर पहुँच जाने की ओर बढ़ता चला जाता है। तर्क की गहराई व सुदृढ़ता एवं सम्पृक्तता की ओर रुचि रखने वाला मन अनेक जटिल समस्याओं को बीजगणित व जटिल अंकगणित की घबड़ा देने वाली गणनाओं में प्रवेश कर दूर तक, सही सही उचित अंत तक पहुँचा देने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। प्रज्ञा की ओर रुचि रखने वाला रेखाचित्रों आदि से सम्पूर्ण शेष को एक साथ अपने में समाविष्ट, समन्वित कर लेता है। इस प्रकार चिन्तन में, भावनाओं को प्रबलतम बनाने हेतु इन दो उपायों का आलम्बन किया जाता रहा है। तार्किक रूप बीजादि गणित के रूप हमें केशववर्णी कृत गोम्मटसार की कन्नड़ में रचित टीका में करणादि विषय पर तथा लब्धिसार एवं क्षपणासार की टीकाओं में दृष्टिगत होते हैं। वहीं प्रज्ञाशील भावना के रूप का निखार ध्यान की ओर ले जाने के लिए यंत्रों तथा मंडलों के रूप में दिखाई देते हैं। इस प्रकार मन ने अपनी सीमा को अधिकतम रूपों में जो ले जाने का प्रयास किया है वह प्रत्येक सभ्यता वाले देशों में धर्म भावना के रूप में उच्चतम प्रयासों के रूप में देखा गया है।

क्रमशः............

जैन धर्म और विज्ञान

-मुनि श्री 108आर्जवसागर जी महाराज

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्म भूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां ,वन्दे तद्गुणलब्धये ।।

हम मनुष्य हैं ! मनुष्य किसको कहते हैं ? मनुष्यत्व स्वभाव वालों को मनुष्य कहते हैं । मनुष्यत्व स्वभाव का मतलब जो ''मनु'' की परम्परा से आये हैं, या उनके उपदेश से चल रहे हैं ऐसा अर्थ लेना चाहिए। ''मनु'' कौन हैं ? कुलकरों को ''मनु'' कहते हैं। इस भू पर मनुष्य लोक में उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी ऐसे काल आते हैं । इस हुण्डावसर्पिणी काल के कुलकरों में आदिनाथ (वृषभदेव) भी एक कुलकर हुये हैं । कुलकर साधारण मनुष्यों को धर्म-कर्म और जीने का उपदेश देते हैं । उन्होंने हम सबको धर्म-कर्म और जीने का उपदेश दिया है, जीवन की उन्नति के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ऐसे चार पुरुषार्थ बतलाये हैं तथा लोगों को असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या ऐसे जीवन जीने के छः उपाय या कर्म बताये हैं ।

यह आत्मा जब धर्म पुरुषार्थ से मोक्ष पुरुषार्थ करने की इच्छुक रहती है तब उस आत्मा को मोक्षमार्ग की आवश्यकता पड़ती है । आदिनाथ प्रभु ने राज्य वैभव सब छोड़कर स्वयं दीक्षा लेकर हम सबको मोक्षमार्ग दिखाया है । वह मोक्षमार्ग कौन-सा है?

''सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।'' त.सू. (1/1)

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र इन तीनों की एकता का नाम ही मोक्षमार्ग है । वे आदिनाथ प्रभु स्वयं ही निर्ग्रन्थ बनकर दीक्षा लेकर मोक्षमार्ग पर चले और कठोर तपस्या करके उन्होंने एक दिन केवलज्ञान को प्राप्त किया। इस केवलज्ञान को भी वीतराग-विज्ञान के आधार से ही प्राप्त किया। उन्होंने जिस मोक्षमार्ग को धारण कर उसका पालन किया था, उसी धर्म का सभी लोगों को उपदेश भी दिया । हमने भी मनु की परम्परा से चार पुरुषार्थों का उपदेश प्राप्तकर, मनुष्य जीवन को प्राप्त किया है । मनुष्य गति में जन्म लेने से मात्र मनुष्य नहीं होते हैं । हमें कुछ कर्त्तव्यों को करना चाहिए। जीवन व्यतीत करना, खाना, सोना मात्र हमारा जीवन नहीं है । किन्हीं चार्वाकों का कहना है कि-

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् । भष्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः ।।

जितना जीना है सुख से जियो, ऋण करके भी घी पियो क्योंकि इस शरीर के नष्ट हो जाने पर

पुनः आगमन कहाँ है ? लेकिन ऐसा नहीं है जीवन। जीवन का एक लक्ष्य होना चाहिए नहीं तो-

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न तपो न धर्मः।
ते मर्त्य लोके भुवि भार भूता, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति॥

जिसके जीवन में विद्या नहीं है, तप नहीं है, दान नहीं है, ज्ञान नहीं है, शील नहीं है, गुण नहीं है और धर्म नहीं है, वह मनुष्यगति में जन्म लेने पर भी तिर्यञ्च के समान विचरता हुआ इस भूमि पर भार रूप रहता है।

इस जीवन में अपनी आत्मा के लिए धर्म कार्य करना, सभी जीवों को समान देखना, सभी जीव सुखी रहें ऐसा सोचना ये सब मनुष्य का स्वरूप है।

धर्म का पहला अंग या आधार अहिंसा है। जहाँ अहिंसा है वहाँ पर ही चारित्र रूपी महल स्थिर रह सकता है। जहाँ अहिंसा नहीं है, वहाँ पर कुछ भी धर्म नहीं है। इसलिए तो ''धर्मस्य मूलं दया'' धर्म की जड़ दया-करुणा है ऐसा कहा है। महल बनाने वाले पहले नींव बनाते हैं। वह बहुत पक्की होना चाहिए, जितनी पक्की नींव बनेगी उतना ऊँचा महल बनेगा। पक्की नीव नहीं तो शीघ्र ही महल टूट जायेगा मिट्टी बन जायेगी। वैसे ही हम जितने अच्छे ढंग से अहिंसा पालन करेंगे उतने अच्छे ढंग से आगे गुणों का विकास करेंगे।

उस अहिंसा को जानने के लिए उस को बतलाने वाले तीर्थंकरों पर, उस पर चलने वाले ज्ञानियों पर, महान आत्माओं पर, हमें श्रद्धा-(विश्वास), रुचि रखना चाहिए। जो वीतराग विज्ञान से केवलज्ञान को प्राप्त कर अपनी आत्मा से इस लोक को जानते हैं, देखते हैं, उन्होंने ही हमें इस लोक का स्वरूप, आत्मा का स्वरूप और वस्तु का स्वरूप बतलाया है और हम भी एक दिन इस लोक का स्वरूप साक्षात् जान कर ही वीतराग विज्ञानी बन करके ही अपने लक्ष्य-मोक्ष को प्राप्त कर सकेंगे।

यह आत्मा सब कुछ करता है। सभी वस्तुओं का अनुभव करता है। इस वस्तु में सुख नहीं मिला है, उसमें मिलेगा, उसमें नहीं मिला इसमें मिलेगा ऐसा हमेशा विचरता हुआ ऐसे ही कार्यों में लगा रहता है। जैसा सुख महान आत्माओं को वीतराग विज्ञान से मिला है वैसा सुख आज तक हमें नहीं मिला। हमें भी एक दिन उसको प्राप्त करना चाहिए। क्योंकि इस परोक्ष ज्ञान से कभी भी वैसा सुख नहीं मिल सकता। उस आत्म सुख के लिए वीतराग विज्ञान ही चाहिए।

क्रमशः............

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक 100

❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र.1 पारस बचपन से कौन से बाबा का दर्शन करते थे?
सोनागिरि बड़े बाबा [ ] कुण्डलपुर बड़े बाबा [ ] मैनागिरि बड़े बाबा [ ]

प्र. 2 वैरागी बनकर पारस गृह में पूछे बिना आचार्य श्री के दर्शनार्थ किस सिद्ध क्षेत्र पर गये थे?
सोनागिरि [ ], गिरनार जी [ ] सम्मेद शिखर जी [ ]

प्र.3 पारस को पहली बार आचार्यश्री के पास अपनी भावना व्यक्त करने का अवसर कहाँ पर प्राप्त हुआ?
आहार जी [ ], पनागर [ ], मढ़िया जी (जबलपुर) [ ]

प्र. 4 पारस को नगर में रोकने के लिये मित्रों ने क्या किया?
सेवादल का अध्यक्ष [ ], घर में जाकर बोला [ ],
पाठशाला का प्रमुख बनाया [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5 पारस ने हाईस्कूल की पढ़ाई पथरिया में की थी। [ ]

प्र.6 सन् 2007 में गुरुवर आर्जवसागर जी का चातुर्मास दमोह में हुआ था। [ ]

प्र.7 पारस गृह में रहते हुए एकासन, सामायिक आदि की साधना की थी। [ ]

प्र.8 पारस को अपने पिताजी के मुखारविन्द से लौकिक शिक्षा पाने का भी सुअवसर मिला था। [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9 गुरुवर आर्जवसागरजी की रचना कृतियों में .... कृति में 122 नियम हैं।
[नेक जीवन, सम्यक् ध्यान शतक, धर्मभावना शतक]

प्र.10 पारस के वैराग्य को देखकर पिताजी ने कविता के रूप में .... संदेश दिया।
[संसार की असारता का, मोक्षपथ में आगे बढ़ने का, आगम ग्रन्थ पढ़ने का]

कृपया यहाँ से निकालें

प्र.11 पारस ने ब्रह्मचर्य व्रत .... सन् में लिया।

[1984, 1985, 1987, 1986]

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये -

प्र.12 मुनिश्री आर्जवसागर जी ने आचार्य श्री के साथ कौन-कौन से ग्रन्थों का अध्ययन किया था? केवल 7 ग्रन्थों का नाम लिखिए।

....

....

सही जोड़ी मिलायें :-

प्र.13	सन् 1995	क्षुल्लक दीक्षा
प्र.14	सन् 1988	तमिलनाडू प्रवेश
प्र.15	सन् 1985	ऐलक दीक्षा
प्र.16	सन् 1987	मुनि दीक्षा

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :-

प्र.17 जिस गुफा में तीर्थोदय काव्य लिखा गया उस गुफा का नाम ज्ञानातिशय गुफा था। [ ]

प्र.18 मुनि दीक्षा के समय गुरुवर आर्जवसागर जी के साथ और 6 दीक्षार्थी थे। [ ]

प्र.19 गुरुवर ने साम्यीावना को सिद्ध क्षेत्र गिरनार में लिखी थी। [ ]

प्र.20 गुरुवर ने आ. शान्तिसागर जी का अष्टक कुन्थलगिरि में लिखा था। [ ]

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता...

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचनविला, कृष्ण विहार, वी.के. कौल नगर, अजमेर (राजस्थान)

उत्तर पुस्तिका - जून 2012

1. चन्द्रप्रभु भगवान 2. जिनालय जाने में 3. संसार से पार होने का
4. गिरनार 5. ना 6. हाँ
7. हाँ 8. ना 9. देव दर्शन
10. 13 11. सम्यग्दर्शन के विषय का
12. जो अज्ञानी रूपी लोहे को सोने जैसे कर देने वाले गुणों को भी लेकर आया था इसलिए माता-पिता ने अपने लाड़ले पुत्र का नाम ''पारसचन्द'' जैन रखा था।
13. फुटेराकलाँ में 14. जबेर में 15. पथरिया में
16. पनागर में 17. सही 18. गलत
19. सही 20. सही

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर
● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता रामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल, रमेशचंद, नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, रामगंजमण्डी
● श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा, रामगंजमंडी

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री जैन नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची

● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री जैन कमलजी काला, जयपुर ● श्री जैन अरुणकाला 'मटरू', जयपुर ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्री नरेश जैन, सूरत (दिल्ली वाले)

✳ संरक्षक ✳

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री जैन गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर ● श्री जैन ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, जयपुर ● श्री राकेश जैन, रोहिणी, दिल्ली ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल ● श्री विजय कुमार जैन, छाबड़ा, जयपुर ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री प्रकाशचंद जैन, उदयपुर ● श्रीमती निधी राहुल जैन, उदयपुर, अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज ● श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा, उदयपुर ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी

✳ विशेष सदस्य ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद, अजमेर ● श्री जैन हर्षद भाई मेहता ● श्री जैन अरविंद भाई गांधी
● श्री जैन संयम संदीप भाई शाह ● श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी ● श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल
● श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता ● श्री जैन कमलेश शाह ● श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह
श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती
श्री राजेश गोकुलप्रसाद जैन

कोपरगाँव
श्री जैन चंदूलाल दीपचंद काले
श्री जैन पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री जैन अशोक चंपालाल ठोले
श्री जैन नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री जैन चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री जैन अशोक केशरचंद पापड़ीवाल
श्री जैन सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री जैन तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री जैन सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री जैन श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री जैन शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

छतरपुर
श्री जैन प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री जैन रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री जैन कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, ललपुरावाले
श्री जैन देवेन्द्र ड्योढ़िया
अध्यक्ष,चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. जैन सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़
श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़
श्री जैन राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा
श्री सोनलकुमार संतोषकुमार जैन, खिरियावाले

सीधी
श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर
श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री जैन ओ.पी. सिंघई
श्रीमती जैन मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम/गुवाहाटी
वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया
श्री नाथूलाल जैन, नलबारी
श्रीमती जैन इंदिरा छाबड़ा, कामरूप
श्रीमती रेखा विनोद जैन, कामरूप
श्रीमती अमरावदेवी जैन सरावगी, रायगंज
श्रीमती जैन सीमा राजेश काला, धुबड़ी
सुश्री जैन बबीता पहाड़िया, कामरूप

जबलपुर
श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर
श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड
श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर
श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री जैन कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री जैन पदम पाटनी
श्री जैन राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती जैन शीला ड्योड़िया
श्रीमती जैन शांतिदेवी सोध्या
श्री जैन हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती जैन शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती जैन साधना गोदिका
श्री जैन राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री जैन प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री जैन भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री जैन प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री जैन महावीर जी सोगानी
श्री जैन संजय सोगानी
श्री जैन अरूण कुमार सेठी
श्री जैन विनोद पांडया
श्री जैन वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती जैन सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती जैन उन्नति पाटनी
श्रीमती जैन सुनीता कासलीवाल
श्रीमती जैन अनीता वैद्य
श्रीमती जैन पदमा लुहाड़िया
श्रीमती जैन सुनीता काला
श्री जैन प्रमोद काला
श्रीमती जैन निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री जैन साक्षी सोनी
श्री जैन महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर. जैन
श्री दिलीप जैन
श्री जैन टीकमचंद बाकलीवाल
श्री जैन हरीशचंद छाबड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री जैन पुष्पा सोगानी
श्री जैन राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन
श्रीमती जैन पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री जैन पारस सोगानी
श्रीमती जैन अरुणा अमोलक काला
श्री जैन कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती जैन इंद्रा मनीष बज
श्री जैन नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाड़ूलाल जैन
श्रीमती जैन रानीदेवी सुरेशचंद मौसा

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्रीमती जैन आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती जैन आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती जैन बीना विमलकुमार पाटनी
श्रीमती जैन राखी आशीष सोगानी
श्रीमती जैन चंद्रलेखा महावीरप्रसाद शाह
श्रीमती जैन प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती जैन शांति देवी पांड्या
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री जैन मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर
श्री जैन निर्मल कुमार पाटनी
श्री जैन मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री जैन हरकचंद छाबड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री जैन सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन
श्री जैन प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ. जैन विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ. श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती जैन प्रेम सेठी
श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन
श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
श्री हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री जैन रीतेश बज
श्री जैन अनिल कुमार बोहरा
श्री जैन नवीनकुमार छाबड़ा
श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री जैन महेन्द्र प्रकाश काला
श्री जैन बाबूलाल सेठी
श्री जैन प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री जैन अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री जैन कैलाश फूलचंद पांड्या
डॉ. जैन विजय काला
श्री सम्पतलाल जैन
श्री जैन जीवन्धर कुमार सेठी
श्री जैन सुशील कुमार काला
श्री धर्मचंद रतनलाल जैन
श्रीमती ज्योत्सना पंकज जैन दोषी
श्री अमित अंधिका जैन

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री जैन नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छाबड़ा)
श्री जैन प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री जैन पदमचंद सोनी
श्री जैन भागचंद जी दोशी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री जैन प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री जैन भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री जैन केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री जैन महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद छाबड़ा जैन
श्री जैन भंवरलाल बिनाक्या
श्री जैन धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायका
श्रीमती जैन मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री जैन राकेश कुमार रांवका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री जैन धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री जैन भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री जैन महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री जैन भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री जैन संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री जैन महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री जैन शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन
श्री संदीप प्रेमचंद जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन
श्री ताराचंद जैन

नागौर

श्री जैन प्रकाशचंद पहाड़िया, डेह

नसीराबाद

श्री जैन महावीर प्रसाद चंद्रप्रकाश सेठी
श्री जैन ताराचंद पाटनी
श्री जैन शान्तिलाल पाटनी
श्री जैन शान्तिलाल गोधा
श्री जैन शान्तिलाल जैन सोगानी
श्री जैन सुशील कुमार गदिया
एडवोकेट अशोक कुमार जैन
श्री टीकमचंद भागचंद जैन
श्री जैन ताराचंद पारसचंद सेठी
श्री जैन महावीर प्रसाद राजकुमार गदिया
श्री प्रकाश चंद जैन

अजमेर

श्री जैन महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती जैन स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री जैन रूपचंद छाबड़ा
श्री जैन सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती जैन चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री जैन चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री जैन निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री जैन नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती जैन निर्मला प्रकाशचंद सोगानी
श्रीमती जैन निर्मला सुशील कुमार जी पांड्या
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री जैन संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री जैन राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री जैन पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती जैन चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री जैन ज्ञानचंदजी गदिया
श्री जैन निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला
श्री विशाल जैन कैलाश बड़जात्या

पिसानगन

श्री जैन पुखराज पहाड़िया
श्री जैन सज्जन कुमार दोशी
श्री जैन अशोक कुमार राकेश कुमार दोशी

कुचामनसिटी

श्री जैन चिरंजीलाल पाटोदी
श्री जैन सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री जैन विनोद कुमार पहाड़िया
श्री जैन लालचन्द पहाड़िया
श्री जैन गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री जैन सुरेश कुमार पांड्या
श्री जैन सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री जैन संजय कुमार महावीर प्रसाद पांड्या
श्री जैन कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री जैन विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती जैन चूकीदेवी झाँझरी
श्री जैन अशोक कुमार बज
श्री जैन संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री जैन वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री जैन भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री जैन ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री जैन एस.के. बजाज
श्री जैन प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन
श्रीमती विमला रमेश चंद्र जैन
श्री सुनील जैन
श्री राजेन्द्र के जैन (चौधरी)
श्री आर.के. जैन, एक्साइज इंसपेक्टर
श्री तेजकुमार एस.एल. जैन
श्री विनय कुमार राजकुमार जैन
श्री सुशील जैन (सुशील आटो)
श्रीमती शांतिबाई जैन

मुम्बई

श्री जैन एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री जैन हर्ष कोछल्ल, बी.ई.
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन
श्रीमती शर्मिला ललितकुमार बज जैन
श्रीमती जैन रंजना रमेशचंद शाह

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री जैन महावीर प्रसाद पाटोदी
श्री महावीर प्रसाद जैन लालसवाले (देवीपुरा कोठी)
श्री ज्ञानचंद जैन, फतेहपुर शेखावटी

दाँता-रामगढ़

श्री जैन विजय कुमार कासलीवाल, दाँता
श्री निशांत जैन, दाँता-रामगढ़
श्री जैन राजकुमार काला, दाँता-रामगढ़
श्री जैन विनोद कासलीवाल, दाँता
श्री जैन सुनील बड़जात्या, दाँता-रामगढ़
श्री जैन अमरचंद सेठी, दाँता-रामगढ़
श्री हरकचंद जैन झांझरी, दाँता
श्रीमती मायादेवी कैलाशचंद जैन

रानोली (सीकर)

श्री विनोद कुमार जैन
श्री जैन राजकुमार छाबड़ा
श्री जैन शान्तिलाल रांरा
श्री जैन रतनलाल कासलीवाल
श्री जैन सुभाषचंद छाबड़ा
श्री जैन विकास कुमार काला
श्री जैन ज्ञानचंद बड़जात्या
श्री जैन गुलाबचंद छाबड़ा (डाकुड़ा)
श्री जैन सुशील कुमार छाबड़ा

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमेरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री जैन पारसमल कोठारी
श्री जैन गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री जैन नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री जैन चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री जैन नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री जैन मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री जैन आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री जैन मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री जैन सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती जैन राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क
श्री मनीष सुभाषचंद जैन, कैलाश नगर

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती अनुपमा राहुल जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
श्री रोबिन सी.के. जैन
श्री जैन चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

पूर्णिया (बिहार)

श्री चांदमल जैन

कलकत्ता

श्री हरीशचंद्र जैन
श्री जैन मनी खजांची

बेंग्लुरु

श्री प्रसन्न कुमार जैन छाबड़ा
श्री जयकुमार जैन
श्री रमेश कुमार जैन

ब्यावर

श्री दीपक कुमार जैन
श्री जैन महेन्द्र कुमार छाबड़ा
श्री धर्मचन्द रांवका जैन
श्री जैन देवेन्द्र कुमार फागीवाला
श्री जैन सारस मल झांझरी
श्री सुशील कुमार जैन बड़जात्या
श्री जैन अशोक कुमार सोगानी
श्री जैन भैरूलाल काला
श्री धरमचन्द जैन
श्री जैन प्रबोध कुमार बाकलीवाल
श्री जैन सुरेश चन्द बड़जात्या
श्री जैन कमल कुमार दगड़ा
श्री जैन शांतीलाल गदिया
श्री सुशील कुमार जैन
श्री जैन पदम चन्द गंगवाल
श्री मयंक जैन
श्री मुकेश कुमार जैन
श्री जैन चिरन्जी लाल पहाड़िया
श्री मनोज कुमार जैन
श्रीमती जैन पुष्पा सोनी
श्री जैन अशोक कुमार काला
श्री जैन विजय कुमार फागीवाला
श्री जैन पारसमल अजमेरा
श्री जैन स्वरूपचन्द रांवका
श्री जैन डॉ. दीपचन्द सोगानी
श्री जैन श्रीपाल अजमेरा
श्री घनश्याम जैन शास्त्री

सुजानगढ़

श्री जैन पारसमल पाण्ड्या

मेड़ता रोड/सिटी (नागौर)

श्री जे.डी. जैन
श्री राजेन्द्र जैन
श्री जैन अमरचंद धर्मचंद पाटनी
श्री जैन रामरतन पाटनी

रामगंज मण्डी, कोटा

श्री शांतिलाल जैन
सुश्री कोमल महावीर जैन
श्री पदम कुमार विमल कुमार जैन
श्री जैन रमेशचंद जी विनायका
श्री जैन अमोलकचंद बागड़िया
श्रीमती उषा बागड़िया जैन
श्री जैन शिखरचंद टोंग्या
श्री जैन प्रकाश विनायका
श्री पदम कुमार राजमल जैन
श्री जैन केवलचंद लुहाड़िया
श्री जैन अजीत कुमार सेठी
श्री जैन महावीर कुमार शाह
श्री अमर कुमार जैन
श्री जैन प्रेमचंद सबड़ा
श्री जैन जयकुमार विनायका
श्री जैन नेमीचंद ठौरा
श्री नाथूलाल जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार नीलेश कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार लालचंद जैन
श्री जैन सुमेरमल पहाड़िया
श्री जैन रामगोपाल सैनी
श्री महेन्द्र कुमार जैन सबद्रा
श्री जैन शिखरचंद्र बागड़िया
श्री चैतन्यप्रकाश जैन
श्री हनुमानसिंह गुर्जर (जैन), तहसीलदार
श्री देशराज जोशी
श्रीमती पदमा विनोदकुमार जैन विनायका
श्रीमती जैन कल्पना विनोद कुमार मित्तल

कोटा

श्री अभिषेक रूपचंद जैन
श्री जैन पीयूषकुमार डॉ. पदमचंद दुगेरिया
श्री कैलाशचंद मोतीलाल जैन
श्री प्रकाशचंद सोहनलाल जैन
श्री निर्मल कुमार जैन सेठी

सोनकच्छ, देवास

श्री जैन पदमकुमार पियूष कुमार छाबड़ा

पारोला (जलगांव)

श्री जयंतीलाल हीरालाल जैन

झालरपाटन (झालावाड़)

श्री विमल कुमार जैन (पाटोदी)

सिंगोली (नीमच)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पाठशाला

बूंदी

श्री रूपचंद मोहनलाल जैन

भिण्डर (उदयपुर)

श्री ऋषभ कुमार जैन सीघवी
श्री विनोद कुमार गंगावत जैन
श्री जैन आदिश्वरलाल कन्हैयालाल
श्री जैन मनोहरलाल मदनलाल भुलावत
श्रीमती अनीता सुरेन्द्र जैन
श्रीमती जैन रामचंदी राजमल कठालिया
श्री बाबरमल जैन
श्री पारसमल जैन (लिखमावत)
श्री सुरेश कुमार जैन (धर्मावत)
श्री जैन प्रकाशचंद भादावत
श्री जैन बसन्तीलाल वाणावत
श्री राजेश कुमार जैन (भादावत)
श्री जैन महावीरलाल कठालिया
श्री जैन अम्बालाल अनिल कुमार गोदड़ोत
श्री जैन बगदीलाल गौतमलाल नागदा
श्री सतीशचंद्र जैन
श्री जैन शान्तिलाल फान्दोत
श्री जैन भंवरलाल जैन नागदा

उदयपुर

श्री जैन महेन्द्र कुमार टाया
श्री कुन्थु कुमार जैन (गणपतोत)
श्री जैन चन्द्र कुमार मित्तल
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला जैन पांड्या
श्री थावरचंद जैन
श्री रोशनलाल लालावत जैन
श्री जैन रमेश कुमार वैद्य
श्री जैन भगवतीलाल भादावत
श्रीमती मंजु कैलाशचंद्र जैन
श्रीमती निर्मला जीवन्धरलाल जैन
श्री महावीर जैन
श्रीमती जैन रेखा शैलेन्द्र कुमार सांगानेरिया
श्री जैन झमकलाल टाया
श्री सुरेशचंद जैन भादावत
श्री नवीन जैन
श्रीमति शशि धनपाल जैन

जूनागढ़ (गिरनारजी)

सुश्री जैन रीटाबेन विपुल कुमार टोपीवाला

बड़ौत (बागपत)

श्री नरेशचंद जैन

ललितपुर

श्री संजय कुमार संतोष कुमार जैन

सूरत

श्री जैन प्रमोदचंद्र मणिलाल मेहता
श्री जैन अशोक भाई पूनमचंद दोषी
श्री रमनलाल जेठालाल जैन
श्री जैन भूपेन्द्र भाई मेहता
श्री जैन भरत के मेहता
श्री जैन सुभाचंद्र बंसीलाल शाह
श्रीमती जैन इंदिरा बेन तरुण कुमार मास्टर
श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर
श्री जैन बाबूलाल केशवलाल शाह
श्री जैन शैलेष कुमार मेहता
श्री जैन रजनीभाई मोहनलाल दोषी
श्रीमती जैन वैशाली अश्विन भाई पारिख
डॉ. जैन नूतन हितेन्द्र मेहता
श्री जैन प्रवीणलाल चंदूलाल मेहता
श्री जैन नरेन्द्र एन मेहता
सुश्री जैन मार्गी पी. सुतरिया
श्री जैन तेजस परिमल शाह
श्री जैन सुभाष भरमा चौगुले
श्री जैन टीकमचंद जैन
डॉ. जैन निमिषा विकेन शाह
श्री जैन अतुल भाई कान्तिलाल मेहता
श्रीमती जैन कुसुम नवनीत दोषी
श्रीमती जैन नीला सुरेश गांधी
श्री जैन अशोक भाई मेहता
श्रीमती जैन तृप्ति एम मोदी

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से
भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/-☐ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/-☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।
क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य

मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

- ☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।
- ☛ सत् साहित्य समीक्षा।
- ☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।
- ☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।
- ☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।
- ☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।
- ☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।
- ☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।
- ☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

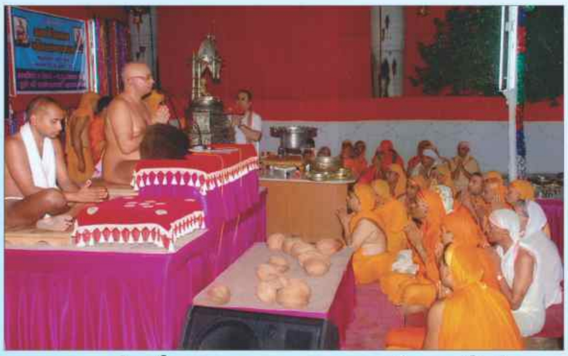

क्षमावाणी पर्व पर क्षमा भावना व्यक्त करते हुए मुनिसंघ

क्षमावाणी पर्व पर क्षमा याचना करते हुए विशाल जनसमुदाय

श्री जिनेन्द्र भगवान का रथोत्सव शोभायात्रा में आबालवृद्धजन

श्री जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभा यात्रा में मुनिसंघ के साथ
भक्तगण आहुरानगर, सूरत

श्री मज्जिनेन्द्र तीर्थंकर प्रभु को रथ में लेकर चलते हुए
हर्षदभाई महेता, आहुरा नगर, सूरत

श्री जिनेन्द्र भगवान को लेकर चलते हुए
भरतभाई महेता

आहुरा नगर सूरत में स्थित मानस्तम्भ व
श्री 1008 भगवान शांतिनाथ जिन मंदिर

मुनिश्री के प्रवचन पारस चेनल पर देने वाले
पुण्यार्जक पी.सी. ठोले, जलगांव (महा.)

षोडसकारण व्रत पूर्ति पर उपकरण प्रदाता
श्रीमान अरविन्द भाई गांधी

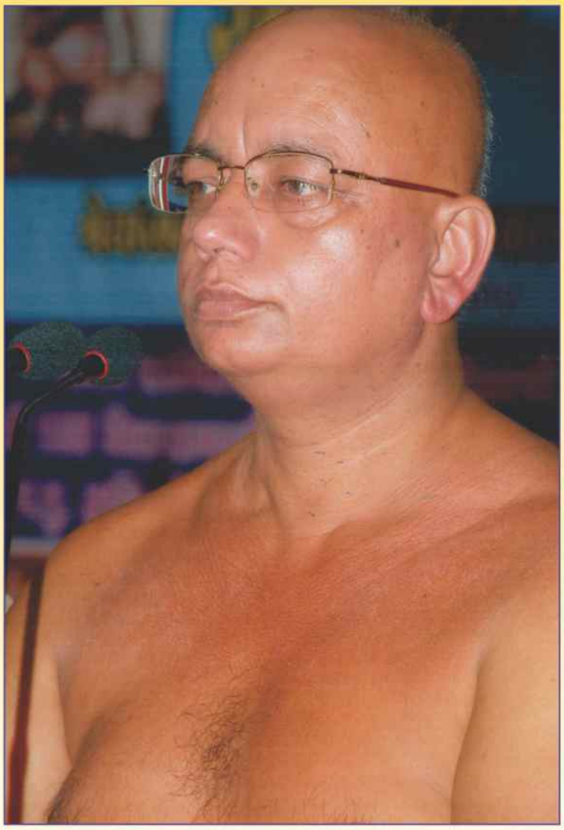

प्रवचन के पूर्व मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज

सूरत नगर रथोत्सव में जन समुदाय के बीच
मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ

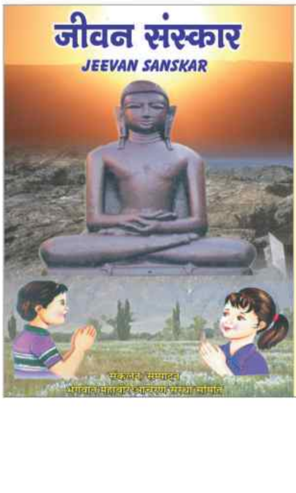

पाठशाला, शिविर हेतु
जीवन संस्कार
सचित्र कलर्ड आर्ट पेपर पर
156 पृष्ठ में उपलब्ध है।
लागत मूल्य रूपये 110/-

प्राप्त करने हेतु पता
एम.आई.जी.-8/4,
गीताजंली काम्पलैक्स,
भोपाल-462003
मो.: 9425601161

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)